खोरी गाँव

एक तमन्ना की सजा

विमल भाई

जनवरी 2023

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

टीम साथी खोरी गांव
ईमेल: khorigaon.right2housing@gmail.com

दिल्ली समर्थक समूह
ईमेल: delhisolidaritygroup.dsg@gmail.com

यह संकलन खोरी गाँव के उन तमाम संघर्षशील लोगों को जिन्होंने अपनी जीवन भर की कमाई से अपने सपने ईंटो पर खड़े किए थे और उनके संघर्ष के साथी रहे दिवंगत विमल भाई को समर्पित है।

देश की सर्वोच्च अदालत के एक आदेश ने उनके सपने तोड़कर उन्हें गरीबी के अंधकूप में ढकेल दिया।

उनके संघर्ष को सलाम !

अनुक्रमणिका

मेरी बात (विमल भाई) 2
आभार निवेदन 3
खोरी गाँव सारांश 4

प्रस्तावना (संजय पारिख) 6

01 **एक तमन्ना की सज़ा** 10
"अस्थायी आश्रय" (मंजू मेनन व सृष्टि अग्निहोत्री) 19
कालक्रम (खोरी गांव: तथाकथित पुनर्वास नीति और लोग) 23

02 **खोरी के लोगो की कहानी खोरी के लोगो की ज़ुबानी** 29
(आप बीती और संघर्ष)

03 **मी लार्ड** (विमल भाई द्वारा रचित) 54
ईंट (विमल भाई द्वारा रचित) 55

04 **स्वर्गीय विमल भाई को सतरंगी सलाम** 56
(सबके संघर्ष के साथी विमल भाई के नाम साथियों के सन्देश) 57

05 **उपसंघार** (इशिता चटर्जी) 72

मेरी बात.......

14 जुलाई 2021 को पहली बार मैं खोरी गांव गया था। वह पहला दिन था जब 14 जेसीबी मशीनों ने खोरी गांव को तोड़ना शुरू किया था। जब लोगों ने मुझसे पूछा कि क्या कर सकते हैं? क्या होगा? पिछले 38 सालो के सार्वजनिक जीवन में यह पहला क्षण था जब मेरे पास कोई उत्तर नहीं था।

हजारों परिवारों के द्वारा खरीदी हुई जमीन पर बनाये गए उनके घरों को अन्यायपूर्ण तरीके से ध्वस्त किये जाने, उनके जीवन भर के सपनो को एक ही पल में तोड़े जाने की घटनाओं का, उनके जीवन के दर्द भरे पहलुओं को और खोरी गाँव से जुड़े हुए आधारभूत तथ्यों को सामने लाने का प्रयास इस छोटे संग्रह में किया गया है।

खोरी गाँव की भौगोलिक, आर्थिक और सामाजिक स्थिति, **7 जून 2021** को खोरी गाँव तोड़े जाने की बाद तथाकथित पुनर्वास की अब तक की परिस्थितियों को भी इस संग्रह में समेटने का प्रयास किया गया है।

खोरी गाँव एक रिहायशी इलाका ही नहीं था बल्कि एक छोटा सा भारत था। **जहाँ हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध अपने मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, चर्च और सब पूजा स्थलों के साथ मेहनत मजदूरी करने वाले लोग रहते थे।** जो दिल्ली राजधानी क्षेत्र की बड़ी इमारतों, फैक्ट्रियों में काम करते रहे हैं। तथाकथित ऊँचे लोगों को,ऊँचा बनाने वाले लोग जिस तरह से उजाड़ें गए गए हैं, वह भारत और चमकता इंडिया के अंतर को साफ दर्शाता है।

पर्यावरण का नाम लेकर जिस तरह खोरी गाँव को उजाड़ा गया, वह कभी न भूलने वाली बात है। खदानों में काम करने वाले लोग और फिर बाद में धीरे-धीरे खोरी गाँव में बसने वाले लोगों पर यह किताब सभ्य समाज के सामने खोरी गाँव के उजाड़ें गए लोगो की सच्चाईयों को हिंदी भाषा में बताने की सबसे पहली कोशिश है।

विमल भाई

आभार निवेदन :--

खोरी वासियों के दर्द को छोटी कहानियों के रूप में लिखने में और किराये पर जाकर रहने वाले खोरी वासियों की समस्याओं के बारे में लिखने में बीना ज्ञान, रेखा चौरसिया, सरोज पासवान, अमन, अभिषेक, धर्मेंद्र, शाहीन परवीन का आभार। विशेष सहयोग और सुझाव के लिए अरविंद कुमार व अरशद अली का खास आभार। लेखन अशुद्धियों को देखने के लिए शबीना ने काफी मेहनत की।

दिल्ली समर्थक समूह का विशेष आभार जिन्होंने इस संकलन को निकालने में सहयोग दिया। फोटो व नक्शे के लिए टीम साथी का विशेष आभार।

संपादक की प्रतिक्रिया : विमल भाई ने 1 अगस्त 2022 को अध्याय 1, 2 और 3 लिखना समाप्त कर दिया। हालांकि, इसके तुरंत बाद वह बीमार पड़ गए और 15 अगस्त 2022 को उनका निधन हो गया। इसलिए खोरी गाँव के संघर्ष में भूमिका निभाने वाले उनके सभी साथियों ने मिलकर उनकी किताब को पूरा किया। प्रस्तावना वरिष्ठ अधिवक्ता द्वारा लिखा गया है। संजय पारिख जी सुप्रीम कोर्ट में खोरी गांव निवासियों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। चैप्टर 4 में टीम साथी के सदस्य अरविंद कुमार, धर्मेंद्र कुमार, अरशद अली, नीलेश कुमार, मुस्कान कुमारी, नासिर हुसैन, सरोज पासवान, अमन और रेखा द्वारा लिखे संदेश हैं। खोरी गांव की अधिवक्ता सृष्टि अग्निहोत्री और तृप्ति पोद्दार ने भी इस अध्याय को अपनी आवाज दी है। निष्कर्ष इशिता चटर्जी ने लिखा है। पुस्तक को अंतिम रूप देने का समर्थन करने वाले साथियों में टीम साथी के अन्य सदस्य अभिषेक, अनिकेत, जसपाल राणा, सोनू यादव, बीना ज्ञान, पिंकी, सनूपम और पर्यावरण शोधकर्ता मंजू मेनन शामिल हैं।

सारांश

खोरी गाँव, दिल्ली और हरियाणा की सीमा और अरावली पहाड़ियों की तलहटी में एक बस्ती है। यह 1970 के दशक में हरियाणा राज्य में, अरावली की पहाड़ियों में खदाने बंद होने के बाद के विकसित हुई। यहाँ खनन 1950 के दशक में शुरू हुआ और 1990 के दशक तक निर्बाध रूप से जारी रहा। यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि खोरी गाँव 1970 के दशक में बसा था और वन संरक्षण अधिनियम 1980 में लागू हुआ था।

जिस भूमि पर बस्ती खड़ी है, वह अनियमित ढलान, दुर्गम, ऊपर उठी चट्टाने और गहरे गड्ढे वाली है। नतीजतन, यहाँ रास्ता हमेशा एक मुद्दा रहा है। खोरी गाँव वाणिज्यिक, आतिथ्य और उच्च अंत आवासीय विकास से घिरा हुआ है। जिनकी पहचान एक ही वन भूमि पर स्थित होने के रूप में की गई है। इसके पूर्व में ताज विवांता होटल, राधा स्वामी सत्संग भवन, शिखर बिजनेस टॉवर, सरोवर पोर्टिको होटल और इसके दक्षिण में फार्महाउस और सूरजकुंड पर्यटक परिसर हैं। इसके उत्तर में लाल कुआँ क्षेत्र में दिल्ली की बस्तियाँ चुंगी न 1, 2 और 3 हैं।

वन विभाग द्वारा बनाई गई एक दीवार, असोला भट्टी वन्यजीव अभयारण्य और खोरी गाँव को अलग करती है। इसका निर्माण रिज को खनन गतिविधि से और विनाश से कानूनी सुरक्षा प्रदान करने और बस्तियों के निवासियों को इस तक पहुंचने से रोकने के लिए किया गया था।

यहाँ जंगल की सीमा और दो शहरों, दिल्ली और फरीदाबाद के बीच की सीमा का कोई चिन्ह नही है। एकमात्र प्रादेशिक मार्कर मौजूद है जो कि खोरी गांव के पश्चिम में असोला भट्टी वन्यजीव अभयारण्य के किनारे पर बनी पत्थर की दीवार है। कोई सीमा चिन्ह न होने के कारण दिल्ली और फरीदाबाद के बीच का क्षेत्र अस्पष्ट क्षेत्र बना हुआ है। इस अस्पष्टता का फायदा दोनों राज्यों के राजनेताओं और भू-माफियाओं ने उठाया, जिन्होंने आज के खोरी गाँव निवासियों को भूखंड बेच दिए। दो राज्यों, जंगल और शहर के हाशिये पर स्थित, खोरी गाँव के निवासी वर्षों से यहाँ कई परेशानियों के साथ रहे हैं। इसके अलावा, उन्होंने कोविड-19 महामारी के प्रतिकूल प्रभावों को भी सहन किया।

7 जून 2021 को सुप्रीम कोर्ट द्वारा दिया गया आदेश सचमुच खोरी गाँव के लिए आखिरी झटका था। इस अन्याय ने खोरी गाँववासियों को गंभीर रूप से प्रभावित किया और उनको, उनकी वर्तमान सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक स्थिति से दसियो वर्ष पीछे धकेल कर उन्हें गरीबी और लाचारी के कुचक्र में डाल दिया है।

("होम लेस स्टाइल एंड नो वेयर टू गो" कंसर्न सिटीजन फॉर खोरी गाँव और जन आन्दोलनों का राष्ट्रीय समन्वय (NAPM) द्वारा 17 जुलाई 2021 को आयोजित जनसुनवाई की रिपोर्ट से प्रभावित)

प्रस्तावना

एक पक्की मिट्टी का सुराईनुमा घड़ा है जिसपर सुन्दर बेल-बूटे कई रंगों से बने हैं, वो मेरे कमरे के बाहर रखा है। न चाहूँ तो भी उससे नज़र बचाकर जा नहीं सकता। वो मुझे देखता है और मैं उसे। विमल भाई ने कहा था ‘भाई साहब इसे किसी अच्छी जगह रखना।’ मैंने जहाँ उसे रखा उसका चित्र भी उन्हें भिजवाया। ‘आपने मेरी कृति को पूरा सम्मान दिया’, विमल भाई बोले। कौन होगा जो इतने प्रेम और आदर से बनी सुन्दर कृति को सम्मान नहीं देगा ? अब वो नहीं तो उनके बनाये चित्र, मिट्टी के बर्तनों पर की रंगकारी, दीवारों पर आदिवासी परम्परा में आंकी चित्रकथायें, सब बोलती हैं और एक मुस्कान सी सारे वातारण में बिखर जाती है।

कभी फोन पर अचानक कहते, ‘भाई साहब आज कुछ गंभीर बात करने का मन कर रहा है’ और फिर आध्यात्म, दर्शन, साहित्य और जीवन के विभिन्न पहलुओं पर चर्चायें होती। मुझे तब उस संघर्षरत व्यक्ति के अंदर एक सीधा-सादा, सरल, सच्चा, सबसे प्रेमभाव रखने वाला, राग-विराग से परे एक सौम्य चेहरा दिखाई देता था। मेरा परिचय ज्यादा उसी चेहरे के साथ था। वह चेहरा विमल भाई की आत्मा थी। उन्हें ये विश्वास था कि वो अपने अंतर को मेरे समक्ष खोल सकते हैं, और मैं अपने पर किये उस विश्वास का पात्र बन धन्यभागी समझता था।

मैं अक्सर उनसे कहता था कि कर्म वही प्रभावी और स्थाई रहता है जो स्वयं के आत्म-मंथन से निकले। सतही या अपने पर आदर्शों की तरह थोपे गये विचार, जीवन में कोई परिवर्तन नहीं लाते। कर्म और विचारों में सामंजस्य होना आवश्यक है। गांधीजी के विचारों से प्रेरित जरूर थे विमलभाई, पर उन विचारों को उन्होंने अपने जीवन में उतारा भी था। सादगी का अर्थ और उसका जुड़ाव स्वयं, जीवन व समाज से क्या है, वो भली-भांति जानते थे। एक सहजता से वो सभी से मिलते थे, चाहे वो गरीब हो या अमीर या कोई बड़ा ओहदा रखने वाला ही क्यूं न हो।

अपने जीवन का मार्ग उन्होंने सोच समझ कर तय किया था। 'मुझे समाज सेवा करनी है', ऐसा विमल भाई ने बहुत पहले से तय कर लिया था। जहाँ भी उन्हें लगता कि उनका उन मानवीय परिस्थितियों में होना जरूरी है, वो सहर्ष अपने आप को समर्पित कर देते। खोरी गाँव का संघर्ष ऐसा ही एक निश्चय था। उन्हें मालूम था कैसे लोग जीविकोपार्जन के एक स्वप्न लिये घर से निकलते हैं, कितनी मुसीबतों का सामना उन्हें करना पड़ता है और कैसे पेट काट-काट कर एक छत अपने परिवार के लिए वो लम्बे समय में बना पाते हैं और एकदिन वो छत तोड़ दी जाती है। सब तितर-बितर हो जाता है। कहाँ जायेंगे? कहाँ रहेंगे? भरी ठंड में कैसे गुजरेंगी रातें? बच्चों का क्या होगा? घर का सामान, बर्तन-भांडे, इतने लम्बे समय में एकत्रित की थोड़ी-बहुत चीजें फिर एक बार सड़क के किनारे आ जाती हैं। जीवन फिर कैसे शुरू होगा? ये प्रश्न आँखों के सामने भयावह स्वप्न की तरह फैल जाता है। कोई समाधान नहीं मिलता, कोई राह नहीं सूझती, कोई दर्द सहलाने वाला नहीं मिलता। ऐसे समय में अचानक उनके पास विमलभाई पहुँच जाते हैं। सिर्फ सांत्वना देने नहीं बल्कि उनके साथ हुए अन्याय के खिलाफ संघर्ष करने के लिए - उन बेसहारों को जैसे भगवान मिल जाता है!

पहले मैंने सोचा था कि इस पुस्तक की शुरूआत विमल भाई के बारे में और उनसे रहे वर्षों के सम्बंध के बारे में विस्तार से लिखूंगा। लेकिन जब लिखने लगा तो लगा कि उनके विचार इस पुस्तक में एक संदर्भ को लेकर हैं और मैं उससे सम्बंधित ही लिखूँ।

'भाई साहब ! सारे कानून गरीबों पर ही क्यों लगाये जाते हैं' विमल भाई बोले। इन गरीबों को क्या मालूम था कि ये जंगल की ज़मीन है? उन्होंने 25-50 गज जमीन खरीदी थी, वर्षों से बचाऐ हुए पैसों से। दसों सालों से वो यहाँ रहते थे। सरकारी कर्मचारी भी आकर कभी पानी, कभी बिजली के नाम पर पैसे ले जाते थे। सब कुछ सरकार की आंखों के सामने हो रहा था - खुल्लम-खुल्ला। हजारों लोगों की बस्ती थी खोरी। कितने बड़े-बड़े लोगों के फार्म हाउस हैं, बंगले हैं, मकान हैं - उनका तो कुछ नहीं होता। क्या जंगलात की इस ज़मीन को वो बदली हुई परिस्थिति में आबादी जमीन नहीं बना सकते, जो कानूनन संभव है? ऐसे कई सवाल विमल भाई पूछते थे।

हर सवाल का उत्तर संभव नहीं था। पर ये सारे सवाल अहम थे। गरीबों की परेशानियों से उनका मन विचलित हो जाता था। यदाकदा आंखों में आंसू भी आ जाते थे। कभी विद्रोही स्वर भी उभरते थे। पर वो जानते थे कानूनी प्रक्रिया में क्या होता है। कैसे बड़ी अदालत (सर्वोच्च न्यायालय) भी न्याय देने में पीछे रह जाती हैं। कानून और न्याय के बीच एक बड़ी खाई है। न्याय कानून के अनुरूप होता है पर यह जरूरी नहीं कि कानून न्यायसंगत हो, याकि कानून का इस्तेमाल कार्यपालिका या न्यायपालिका ठीक तरह से करे। समानता ही नहीं तो समान रूप से कानून कैसे न्याय दिला सकता है? यह भी एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। अमीर और गरीब के बीच की दूरी बढ़ती जा रही है। कुछ व्यक्तियों के हाथों में ही अधिकतम पूंजी हैं। मजदूरों, किसानों और छोटे-मोटे कार्यों से जीवन-यापन करने वालों की स्थिति में कोई मलभूत परिवर्तन हमारे स्वाधीन हो जाने के 75 वर्षों बाद भी नहीं हुआ है।

टेहरी बांध से उजड़े घरों का दर्द उन्होंने वर्षों भोगा था। कितने सालों वो मेरे साथ टेहरी से सम्बंधित कानूनी लड़ाई में जुटे रहे थे- करीब 15-20 वर्षों तक। वो रात में बस से निकलते, डूब क्षेत्र में आये गांवों का दौरा करते, उनसे बातचीत करते और लौट कर उनकी समस्याऐं मुझे बताते, ताकि हम कोर्ट में सही तथ्यों को रख सकें। माटू संगठन को खड़ा कर उन्होंने पर्यावरण और विस्थापन से हुई बहुत सी समस्यायें एन.जी.टी. एवं सुप्रीम कोर्ट में उठाईं। जहाँ जरूरत पड़ी वहाँ आंदोलन किया। साथ-साथ ही वो मेधा दीदी के साथ सरदार सरोवर के विस्थापित लोगों की लड़ाई में भी जुटे रहे। मेधा दीदी उनकी प्रेरणास्रोत रहीं- ऐसा वो मुझे बार-बार कहते थे।

कई वर्ष पहले उनकी तबियत बहुत खराब हो गई थी। वो अकेले ही उस बीमारी से जूझ रहे थे। एक दिन फोन पर उन्होंने मुझसे कहा कि भाई साहब मुझे मुत्यु का भय नहीं लेकिन भगवान थोड़ा समय और देता तो मैं लोगों के लिए कुछ और कर पाता। शायद भगवान ने उनकी बात सुनी और उनके स्वास्थ्य में सुधार हुआ। शायद खोरी गाँव के संघर्ष के लिये ही भगवान ने उन्हें पुनः शक्ति दी थी। विमल भाई थोड़े ही समय में खोरी गाँव में सबके प्रिय हो गये- विमल भाई, विमल दादा, विमल बाबा, विमल काका आदि-आदि नामों से लोग उन्हें पुकारते थे। बच्चों से उन्हें विशेष प्यार था। लोगों का अपार स्नेह जब वो एम्स में भर्ती थे और जब नहीं रहे, देखने को बनता था। ऐसे स्नेह के पात्र विरले ही हो पाते हैं। इससे बड़ा कोई पुरस्कार जीवन में नहीं मिल सकता।

इस पुस्तक में विमल भाई की वेदना, उनका विद्रोह, उनका क्षोभ स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। सामाजिक-आर्थिक असमानता, सरकार और न्यायपालिका का गरीबों के प्रति दुराव और कठोर रूप, विमल भाई को प्रताड़ित करता था।

कैसे खोरी गाँव बना, किन परेशानियों से जूझते लोगों ने अपने छोटे-छोटे घरोंदे बनाये, क्या स्वप्न उन्होंने संजोये थे, उनके साथ क्या हुआ- यह सब विमल भाई ने इस पुस्तक में लिखा है। खोरी के परिवारों की, व्यक्तियों की, उनके दर्द और विवशता की दास्तान भी लिखी है। मेरा उनके बारे में कुछ भी लिखना ठीक न होगा, अच्छा हो आप सब खोरी की दास्तान विमल भाई के शब्दों में ही सुनें।

संघर्ष अभी खत्म नहीं हुआ है, विस्थापन के बाद पुनर्वास की लड़ाई अभी जारी है। डबुआ बस्ती जहाँ करीब एक हजार से कुछ ज्यादा परिवारों को एक कमरे का फ्लैट बहुमंजिली इमारत में मिला है, वहाँ पानी, बिजली के अलावा नहाने-धोने, गंदगी आदि कई समस्यायें हैं। नई जगह पर जीविका की एक बड़ी विडम्बना है। बच्चों की शिक्षा की भी परेशानी है, फिर से टूटे-फूटे स्वप्नों को जैसे-तैसे बटोर कर लोगों को फिर आगे बढ़ना है। जिजीविषा इसे ही कहते हैं।

विमल भाई नहीं रहे पर उनका दिया भरोसा, सम्बल, सहारा लोगों के साथ है, हमेशा रहेगा। संघर्ष कभी समाप्त नहीं होता, गरीबों, मजदूरों और किसानों का शोषण मिटता नहीं। तभी विमल भाई जैसे लोग जन्म लेते हैं।, वो मिटते नहीं, कई-कई विमल भाई इन संघर्षों में सामने आते हैं। खोरी गाँव में महिलाओं, पुरुषों और बच्चों में विमल भाई जीवित हैं। वे विमल भाई की भाषा बोलते हैं, उनमें नई चेतना है, नई ऊर्जा है, नया विश्वास है। विमल भाई की खोरी गाँव के लिए, समाज के लिए यही एक बड़ी देन है, बड़ी उपलब्धि है।
विमलभाई जिन्दाबाद !

मैं फिर एकबार उनकी कलाकृति को देखता हूँ अपने कमरे के सामने तो उनका मुस्कुराता चेहरा दिखाई देता है, ‘भाई साहब संघर्ष जारी है !’

जियो विमल भाई !!

- संजय पारिख

01 एक तमन्ना की सज़ा

लोगो का विस्थापन खासकर आदिवासी, किसान और मजदूरों का विस्थापन देश में किसी भी विकास परियोजना या नए दौर में जंगल को बचाने की मुहिम के दौरान बहुत बड़े पैमाने पर हो रहा है। कोरोना में तालाबंदी ने यह सिद्ध कर दिया कि देश के गरीब मेहनतकश मजदूर को शहर में रहने के लिए मकान का किराया देना, एक बहुत बड़ा खर्चा है।
कृषकाय मजदूर वर्ग अपनी सूखी हड्डियों से शहरों को बनाते हैं, विकास की बड़ी-बड़ी इमारतें खड़ी करते हैं। फिर कानून, बाजार, नियोक्ताओं, राजनेताओं और हर छोटे से बड़े तबके सभी की जी हजूरी करके किसी तरह अपनी रोज़ी- रोटी कमाते हैं।

शहर के निर्माण में एक बहुत बड़ा योगदान देने के बावजूद भी इन मेहनतकश मजदूरों को कामचोर, मक्कार, कब्जेदार और उनकी बसाहट को अपराध के अड्डे या कुछ भी कह दिया जाता है। अपराध की दृष्टि से इन्हें हमेशा ही शक की निगाह से देखा जाता है। मजदूरों और नियोक्ताओं, जिनके लिए वे काम करते हैं, के बीच विभाजन की स्पष्ट रेखा हमेशा नजर आती है। इन मजदूरों के पास अपने संघर्ष में समर्थन के लिए किसी बड़े स्तर पर कोई बड़ी पहुँच नहीं होती है। कोई यूनियन वाले, कोई संस्था या कोई गैर सरकारी संगठन ही इनकी थोड़ी बहुत मदद करते है।

जीवन की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति इन मजदूरों का एकमात्र संघर्ष होता है। जो मजदूर किसी संगठित क्षेत्र से नहीं आते है, उनकी स्थिति तो अत्यंत दयनीय होती है। शहरों में गंदे नालों के किनारे, नदियों के किनारे या किसी खाली जमीन पर किसी तरह का झोपड़ा, टिन का शेड डालकर रहने और हर तरह की उमंगो के साथ जीने वाला यह वर्ग जिंदगी को हमेशा हसकर जीता है और शहर को अपनी अनेक प्रकार की सुविधाएं प्रदान करके रहने लायक बनाता है।

कभी-कभी इन गरीब मेहनतकश मजदूरों की भी कुछ तमन्नाये बड़ी हो जाती हैं और वो भी बड़े शहर में कहीं अपना एक कदम जमाना चाहते हैं जिसकी सजा भी उनको मिलती है। सपने देखना अलग बात है मगर अपने सपनों को जमीन पर खड़ा करना? आखिर ये इतनी बड़ी हिमाकत कैसे कर सकते हैं?

हरियाणा के फरीदाबाद जिले में खोरी गाँव इसका एक बड़ा उदाहरण रहा। यह क्षेत्र हरियाणा-दिल्ली के बॉर्डर पर स्थित है। सर्वोच्च न्यायालय के आदेश द्वारा पुराने जमाने की बजरी और पत्थर की खदानें जब बंद हुई तो वहाँ काम करने वाले काफी मजदूर वहीं रह गए। धीरे-धीरे रोजगार की तलाश में निकले मजदूर भी वहाँ आकर बसने लगे। यह देखकर राजनीतिक संरक्षण प्राप्त लोग इस जगह पर 25-50 गज के जमीन के टुकड़े इन लोगों को बेचने लगे। मजदूरों ने कभी साधारण से कागज पर आपसी विश्वास के तहत तो कभी किसी वकील के कागजात पर अपनी गाढ़ी कमाई से या कभी भारी ब्याज पर कर्जा लेकर तो कभी अपने गाँव की जमीन-जायदाद बेचकर अथवा बैंकों से भी कर्जा लेकर यहाँ जमीनें खरीदी और अपने छोटे-छोटे घरोंदे बनाए।
...

संक्षेप में कहे तो खोरी गाँव की जमीन को जंगल की जमीन माना गया जिसे खाली कराने के मुद्दे को लेकर एक मुकदमा चंडीगढ़ उच्च न्यायालय से सर्वोच्च न्यायालय पहुँचा। जहाँ सर्वोच्च न्यायालय के आदरणीय न्यायाधीश महोदय के सामने जब जंगल से कब्जे हटाने की बात आई तो फरीदाबाद नगर निगम ने इन 10,000 से ज्यादा ईटों के बने मकान वालो को झुग्गी वाला और अंग्रेजी में स्लम डवेलर्स बताकर हटाने की गुजारिश की।
अफसोस की बात तो यह है कि इन सबके पक्ष में खड़े वकील भी इन्हें इसी नाम से पुकार रहे थे। जज साहब खानविलकर जी ने 7 जून, 2021 को दूसरे पक्ष के किसी भी तर्क को सुने बिना, जंगल से सभी अवैध कब्जे तुरंत हटाने का आदेश दे दिया।

कोरोना काल में जहां 5 लोगों के इकट्ठे होने पर सख्त पाबंदी थी और कहीं भी आने -जाने के लिए कोरोना टेस्ट कराना जरूरी था, वहीं 10,000 से ज्यादा घरों में रहने वाली आबादी को हटाने के लिए कोरोना वायरस सम्बन्धी दिशा-निर्देशों व पुनर्वास और पुनर्स्थापना जैसे महत्वपूर्ण विषयों व उससे सम्बंधित किसी भी प्रक्रिया को दरकिनार करते हुए माननीय न्यायधीश खानविलकर व माननीय न्यायधीश खन्ना ने आदेश दिया कि पहले जंगल खाली कराए, बाकी सुनवाई बाद में होगी।

हरियाणा सरकार ने 7 जून, 2021 के अगले ही दिन पूरी तेजी के साथ सर्वोच्च न्यायालय के आदेश की घोषणा पूरे खोरी गाँव में करनी शुरू कर दी और दो हजार से ज्यादा अलग-अलग तरह के सुरक्षा बलों को खोरी गाँव के मुहाने पर लाकर खड़ा कर दिया। खोरी गाँव में दिल्ली की तरफ से आने वाली बिजली और पानी की सप्लाई काट दी गई। पत्रकारों तक का खोरी के अंदर जाना बहुत मुश्किल कर दिया गया। यहाँ तक कि सामाजिक कार्यकर्ता व संस्थायें भी अंदर नहीं जा सकती थी। बाहर से कुछ भी सामान खोरी गाँव के अंदर ले जाना बंद कर दिया गया। पुलिस कड़ाई से आने-जाने वालों का आधार कार्ड देखकर ही उन्हें खोरी गाँव में जाने की अनुमति देती थी। अपने घर को टूटते देख और रोज़ की प्रताड़ना से तंग आकर कई लोगों ने आत्महत्या तक कर ली। एक व्यक्ति की आत्महत्या पर तो पुलिसबल ने वहाँ पहुंचकर उसकी लाश को अपने कब्ज़े में ले लिया और वहाँ मौजूद सभी लोगों को तितर-बितर कर दिया। जिस घर में आत्महत्या हुई थी, पुलिस ने उस व्यक्ति के परिजनों को थाने में रखा और फिर वे लोग दिल्ली की बस्तियों में कहीं खो गए। एक अधेड़ उम्र वाले घनश्याम जी ने भी सदमे के कारण आत्महत्या की। उस समय कुछ लोग वहाँ इकट्ठा हुए तो उन लोगों को पुलिस पकड़ कर ले गई। सबको 4 घंटे के लिए जेल में रखा गया जबकि किसी का कोई कसूर नहीं था। एक विद्यार्थी जो कि केवल वहाँ खड़ा था, उसको भी पुलिस जबरन ले गई जिस कारण उसकी परीक्षा भी छूट गई।

खोरी गाँव में अगर कहीं भी लोग इकट्ठा होते तो उन पर पुलिस द्वारा लाठीचार्ज किया जाता। यह सब बराबर चलता रहा और इस बीच में किसान नेता गुरनाम सिंह चढूनी जी व जनसंघर्षशील मेधा पाटकर ने भी वहाँ पहुँचकर लोगों को ताकत दी और दुनिया के सामने खोरी गाँव का सच रखा।

अपनी आंखो के सामने अपना घर टूटता देख कर लोग हैरान-परेशान रहे। उनकी इस स्थिति में उन्हें जिस किसी ने जहाँ भी बुलाया, वे उम्मीद के साथ वहाँ गए, धरने दिए, प्रदर्शन किए, पुलिस और सुरक्षा बलों की लाठियां खाई, जेल भी भुगती। कई बार कुछ एनजीओ के लोगों ने उनको मदद के लिए बुलाया और खुद ही गायब हो गए।

लोगों ने इस प्रकार का धोखा भी खाया। यह सब ऐसे ही चलता रहा और फिर 14 जुलाई 2021 को जब दिल्ली के लोग मानसून की फुहार का स्वागत कर रहे थे। तब उसी समय खोरी गाँव में घरों को 14 जेसीबी मशीनों ने गिराना चालू कर दिया गया। लोग दुख से बताते है कि प्रशासन द्वारा इस बात की परवाह किये बिना कि इतनी तेज़ बारिश में वहाँ के लोग विशेषकर महिलाएं, बच्चे और बुज़ुर्ग अपना बचाव कैसे करेंगे,उ नके घरों को तोड़ दिया गया। यहाँ तक कि जिन घरों में पुलिस ने व नगर निगम,फरीदाबाद की आयुक्त ने बैठकर तेज़ बारिश से अपना बचाव किया, उन सभी घरों को भी तोड़ दिया गया।

प्रशासन और पुलिस का यह कहर लगातार चला और खोरी में रोज 500 से 1,000 घर अलग-अलग जगह से तोड़े जाते रहे। इस पूरी कार्यवाही में लोगो ने बहुत ही बुरा समय देखा। इस दौरान लोगो ने शारीरिक ही नही मानसिक पीड़ा भी झेली। उनके सम्मान, विशेषकर महिलाओं के सम्मान को तो बहुत ही बुरी तरह से आहत किया गया। पुलिस, दूध पिलाती महिलाओं को गंदी दृष्टि से देखती थी, उनके घरों में घुसकर अपने लिए खाना भी बनवाती थी और उनके टॉयलेट का इस्तेमाल करती थी। इस पूरी प्रक्रिया में महिलाओं की व्यक्तिगत सुरक्षा बहुत अपमानजनक स्थिति में रही।

एक तरफ तो लोगो ने लॉकडाउन में बेरोजगारी झेली फिर दूसरी तरह उनका घर भी तोड़ दिया गया। इस स्थिति में प्रशासन द्वारा उजाड़े गए लोगों के लिए बाहर से पका हुआ खाना पहुचाना भी बहुत बड़ी समस्या थी। दिन में पुलिस खाना ले जाने वालो को मारती थी। अत: रातों को जाकर लोगों को खाना और पानी पहुँचाया गया। शासन-प्रशासन की निष्ठुरता का यह अत्यंत निर्दयी रूप था।

क्योंकि हरियाणा सरकार ने यहाँ के लोगो को कोई आधारभूत सुविधा नही दी थी। तब दिल्ली के राजनेताओं ने इस आबादी को "मदद के लिये" दिल्ली के आधार कार्ड, कुछ दूरी तक सड़क, पानी, बिजली भी पहुचाई। ज्यादातर आबादी के पास दिल्ली का राशन कार्ड, वोटर आईडी, आधार कार्ड, बिजली का मीटर आदि ऐसे तमाम सबूत रहे। मगर दिल्ली हरियाणा की सीमा का कोई निशान नहीं लगाया गया।

खोरी गाँव को तोड़ते के समय दोनो राज्यों के अधिकारियो ने, खोरी गाँव के लोगो को बिना बताये 1962 में खनन के समय मानी गई एक सीमा को ही सीमा का निशान मान लिया। पहले उस सीमा पर एक लोहे की जाली लगाई गई थी। दिल्ली सरकार ने भी नए संदर्भों में इस पर कोई ध्यान नहीं दिया और विध्वंस की इस प्रक्रिया में दिल्ली क्षेत्र में आने वाले बहुत सारे वो मकान भी गिराए गए जिनको 2001 में दिल्ली की जनगणना में लिया गया था। उन सब मकानों को भी फरीदाबाद नगर निगम की जेसीबी ने तोड़ दिया।

जिनके मकान तोड़े गए उन लोगों की ओर से, कंसर्न सिटीजन फ़ॉर खोरी व जन आंदोलनों का राष्ट्रीय समन्वय की ओर से अगस्त, 2021 में दिल्ली सरकार को लगातार चिट्ठियां भेजी गई किन्तु दिल्ली सरकार की तरफ से कोई जवाब नहीं आया। लोगो के मकान तोड़े जाने के समय कोई भी राजनीतिक दल, लोगों के साथ खड़ा नजर नहीं आया परन्तु वे वोट मांगने के लिए जरूर आए थे।

घर टूटने के बाद लोग फरीदाबाद में लक्कड़पुर और दिल्ली में लाल कुआं आदि जैसे अनेक इलाकों में किराए पर या फिर अपने रिश्तेदारों के पास या कहीं सड़क पर रहें। कुछ लोग खोरी गाँव में भी कहीं झुग्गी डाल कर रहे क्योंकि उनके पास कहीं जाने के लिए कोई जगह नहीं थी। मगर साल भर तो मकानों का तोड़ा जाना जारी रहा। पहले बड़े मकान बने हुए थे तो उनको तोड़ना मुश्किल था। फिर बाद में जगह-जगह नगर निगम की जेसीबी मशीन और पुलिस फोर्स आती और मकानो को तोड़ती रही। लोगों के साथ मारपीट भी बहुत हुई। लोगो के सर तक तोड़े गए। धीरे धीरे हर बार की तोड़फोड़ में खोरी गाँव की ज्यादा से ज्यादा जगह समतल होती गई। अंत में रोज पुलिस, रोज बुलडोजर तोड़फोड़ करते, परन्तु लोग क्या करते? अगर हम खोरी गाँव के पीछे की ज़मीन पर नज़र डालें तो वहां बड़े- बड़े होटल नजर आएंगे, जोकि उसी जमीन पर बने है जो पंजाब भूमि संरक्षण कानून के तहत ही आती हैं। जिसके तहत ही खोरी गांव को उजाड़ा गया होगा। सर्वोच्च न्यायालय ने खोरी गाँव को तोड़े जाने के आदेश के बाद जब पंजाब भूमि संरक्षण कानून 1900 (पीएलपीए) में आने वाली सभी जमीन खाली कराने का आदेश दिया तो भारी-भरकम फीस वाले वकील सर्वोच्च न्यायालय में पहुंचे और उनको स्टे भी मिल गया। वे होटल अब भी वही हैं और उनका काम-धंधा सब चालू है। केवल खोरी गाँव के जो हजारों परिवार उजाड़े गए, उनका जीवन और आर्थिक स्थिति को अत्यधिक बुरी तरह आघात पहुँचाया गया और उनके जीवन को दसियो साल पीछे ढकेल दिया गया है।

7 जून, 2021 के सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के डेढ़ महीने बाद 23 जुलाई, 2021 को सर्वोच्च न्यायालय की दूसरी सुनवाई तक खोरी गाँव आधा उजाड़ दिया गया था। न्यायाधीश महोदय ने विभिन्न मुकद्दमों के वादियों की शिकायत पर ध्यान दिया कि उजाड़े गए लोगों के रहने-खाने आदि की व्यवस्थाएं नही हो पाई है। इसके बाद सर्वोच्च न्यायालय ने अपने आदेश में वादियों को नगर निगम कमिश्नर, फरीदाबाद को अपना प्रतिवेदन भेजने के लिए कहा और उसकी सुनवाई न होने पर अदालत द्वारा संज्ञान लेने के बारे में कहा गया। अपने आदेश में सर्वोच्च न्यायालय ने 31 जुलाई, 2021 तक पुनर्वास नीति के बारे में विभिन्न वादियों को अपने सुझाव नगर निगम को भेजने के लिए कहा।

मगर सरकार तो सरकार होती है! जब 3 अगस्त,2021 को अगली सुनवाई हुई तो फरीदाबाद नगर निगम ने कह दिया कि हमने अपनी ओर से पुनर्वास नीति हरियाणा सरकार को दे दी है। न्यायाधीश महोदय ने सुनवाई की फिर अगली तारीख 21 अगस्त,2021 तय कर दी। तब तक खोरी गाँव को पूरा साफ कर दिया जाना था। यह तथ्य भी याद रहे कि मकानों को तोड़ने से पहले खोरी गाँव के लोगों का कोई सर्वे नहीं किया गया। खोरी गाँव में 10,000 से ज्यादा मकान गिराए गए और एक-एक मकान में कई-कई परिवार रहते थे।

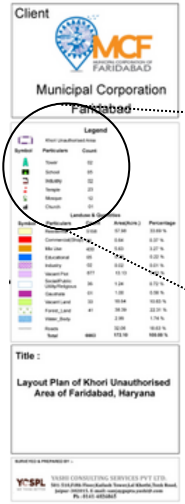

MCF फरीदाबाद ने ड्रोन सर्वे का एफिडेविट कोर्ट में जमा कराया जिसमे 23 मन्दिर , 5 स्कूल , 12 मस्जिदों के साथ 1 चर्च का जिक्र हैं ।

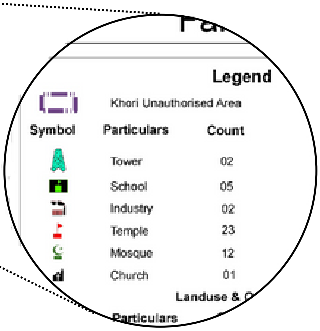

खोरी गाँव उजाड़े जाने से पहले का सेटेलाइट मानचित्र

खोरी गाँव उजाड़े जाने से बाद का सेटेलाइट मानचित्र

लोगों के घर तोड़ने के बाद बेघरो के लिये नगर निगम ने खासकर अदालत को बताने के लिये राधा स्वामी सत्संग में व्यवस्था की झूठी घोषणा की। परन्तु वास्तव में ऐसा कुछ नहीं था, वह व्यवस्था तो सत्संग की ओर से की गयी थी। उजाड़े गए लोगो के भोजन और आश्रय की व्यवस्था के नाम पर राधा स्वामी सत्संग में एक तंबू लगा दिया गया था। जिसकी व्यवस्था रेड क्रॉस के कुछ कर्मचारी देख रहे थे। ध्यान देने योग्य बात है कि राधा स्वामी सत्संग भी हरियाणा वन विभाग द्वारा राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण में दाखिल एक लिस्ट के अनुसार वन भूमि पर ही स्थित है।

राधा स्वामी सत्संग में लोगों को खाना देने की बात हुई, जैसा कि हर आश्रम में दिया ही जाता है। परन्तु सरकार ने अपनी ओर से इतने लोगों के घर गिराने पर कोई आश्रय या खाने की व्यवस्था नहीं की। नगर निगम, फरीदाबाद के 2-3 कर्मचारियों ने लोगों को दिखाने के लिए कुछ फोन और बस कागजी कार्रवाई की। फिर अगस्त, 2021 माह के बाद राधा स्वामी सत्संग में लोगों के लिए कोई सुविधा बरकरार नहीं की गई।

पुनर्वास नीति में 3,77,000 ₹ में एक फ्लैट,10,000 ₹ की एकमुश्त रकम के साथ हर महीने 1950 ₹ की किश्त की मांग की गई। या यों कहें कि सब कुछ छीनने के बाद एक कपड़ा देने के लिए भी सरकार पैसा मांग रही है।

जबकि पुनर्वास के लिए फरीदाबाद जिले में ही लगभग 20 किलोमीटर दूर दी जा रही डबुआ कॉलोनी के फ्लैट बहुत ही बुरी दशा में थे। वहां किसी तरह की कोई सुरक्षा नहीं है,बिजली-पानी नहीं हैं। यहाँ तक कि फ्लैटों में कोई खिड़की-दरवाजे तक भी नहीं थे। फिर एक प्रश्न ये भी है अपने पुराने क्षेत्र से दूर लोगो के रोजगार की व्यवस्था कैसे होगी?

यह तथाकथित पुनर्वास नीति खोरी गाँव के लोगों के लिए पुनर्स्थापन की नीति नहीं बल्कि हरियाणा सरकार के पुराने फ्लैटों को किसी तरह बेचने की कोशिश है।

इस तथाकथित पुनर्वास नीति को "शांति, अनीता, बीना ज्ञान, सरोज पासवान व बब्बो बनाम भारत सरकार व अन्य" वाले मुकदमे में चुनौती दी गई। जिसके तहत सरकार को पुनर्वास से जुडी नीति व् प्रक्रिया की जानकारी के लिए ई-पोर्टल जारी करना पड़ा। मगर ई-पोर्टल अभी भी बहुत अपारदर्शी है और काम करने लायक नहीं है। ऐसी स्थिति में यह एक बहुत बड़ा सवाल है कि लोग जानकारी लेने के लिए कहां जाएं**?**

जो लोग खोरी गाँव के अपने टूटे घरों की ईंटों पर बैठे। उनको वहां से बिना किसी आश्रय व भोजन तथा स्वास्थ्य की व्यवस्था किये तुरंत निकलने के लिए कहा गया अन्यथा उन पर कानूनी कार्रवाई करने की धमकी दी गई। एक तरफ तो खोरी गाँव में लोगो को कानून का डर दिखाकर उनके घरों को बार-बार बुलडोजर से तोड़ा जाता था।

यहाँ तक कि उनके तारपोलिन तक को उठा कर फेंक दिया गया। वहीं दूसरी तरफ सरकारी- गैर सरकारी बड़ी बिल्डिंगों, बड़े-बड़े फ्लैटों, ऊँची इमारतों और फार्म हाउसों को बचाने के लिए हरियाणा सरकार ने 22 अक्टूबर, 2021 को सर्वोच्च न्यायालय में "पंजाब संरक्षण भूमि अधिनियम" के तहत कार्यवाही करने से असमर्थता जताई। जबकि ध्यान देने वाली महत्वपूर्ण बात यह है कि पूरा खोरी गाँव इसी अधिनियम के तहत उजाड़ा गया है। यह अधिनियम कहता है कि हरियाणा में इस अधिनियम के अंतर्गत जो भी जमीने आती है वो वन भूमि की तरह मानी जाएंगी। अर्थात इस भूमि पर वन के अलावा कोई अन्य गतिविधि की इजाज़त नहीं होगी। वहाँ कोई स्थाई निर्माण नही होगा।

अब इस स्थिति में जहाँ एक ही अधिनियम के तहत हरियाणा सरकार खोरी गाँव के सभी घरों को तोड़ती है और बड़ी इमारतों, फ्लटों और फार्म हाउसों को तोड़ने में असमर्थता जताती है। उस स्थिति में हरियाणा की सरकार खोरी गाँव के हजारों परिवारों की जिंदगी के प्रति कितनी जिम्मेदारी लेगी? यह तो भविष्य ही बताएगा। मगर अभी तक का तो खोरी का इतिहास हरियाणा सरकार द्वारा काला ही लिखा गया है।

सर्वोच्च न्यायालय के माननीय न्यायाधीश जी ने काले चोगे में, काली स्याही से खोरी गाँव के लोगों की अब तक की जिंदगी को काली रात में तब्दील कर दिया है। प्रश्न यह है कि माननीय न्यायाधीश जी ने सुनवाई के दौरान यह कहा था कि जंगल खाली कीजिए, उसके बाद पुनर्वास की बात देखी जाएगी।

परन्तु **तथ्य ये है** कि 7 जून, 2021 को जिस कानून के तहत खोरी गाँव को तोड़ा गया उस कानून की वैधता और उसकी सीमाओं पर सर्वोच्च न्यायालय ने 22 अक्टूबर, 2021 को सुनवाई शुरू की। हरियाणा सरकार के पास खोरी गाँव तोड़ने के समय हजारों की संख्या में सुरक्षा बल, नगर निगम फ़रीदाबाद, वन विभाग तथा अन्य भी अधिकारी मौजूद थे और वे साल भर बराबर तोड़फोड़ के लिए आये तथा गैर जानकार, अनपढ़ मजदूर वर्ग पर यह सिद्ध करने की जिम्मेदारी डाल दी गई है कि वे वहाँ रहते थे। अब मात्र एक ई-पोर्टल जो पुनर्वास की सारी जानकारी दे सके वो तक ठीक प्रकार से मौजूद नही है। पुनर्वास प्रक्रिया में कोई पारदर्शिता नहीं है।

अत: कुल मिलाकर देखा जाये तो समस्या ये है कि खोरी गाँव के घरों को तोड़ने से पहले यहाँ किसी भी प्रकार का कोई पूरा जमीनी सर्वे नही किया गया जिसे अदालत में प्रस्तुत किया गया हो। कोई अलग से समिति नही बनी जो इनके पूरे पुनर्वास की प्रक्रिया को देखें। इस प्रकार शासन-प्रशासन ने खोरी गाँव के निवासियों के पूरे जीवन को एक अंधकूप की और धकेल दिया। यह है एक तमन्ना की सजा !

विमल भाई

"अस्थायी आश्रय"

---- डॉ. मंजू मेनन व वकील सृष्टि अग्निहोत्री

14 जुलाई 2021 से खोरी गाँव के ईटो वाले मकानों को "पंजाब भूमि संरक्षण कानून" के तहत आने के कारण सर्वोच्च न्यायालय के आदेश से,14 जेसीबी द्वारा तोड़ना शुरू किया। नगर निगम फरीदाबाद, जिसकी जिम्मेदारी लोगों को अस्थाई आश्रय देने की थी, उसने "पंजाब भूमि संरक्षण कानून" के तहत ही आने वाले राधा स्वामी सत्संग में एक अस्थाई व्यवस्था की थी।

पुनर्वास के मुद्दों पर काम करने वाली शोधकर्ता डॉ. मंजू मेनन जो कि खोरी गाँव के कानूनी मुद्दो और इतिहास से परिचित है और माननीय सर्वोच्च न्यायालय न्यायालय के समक्ष याचिका संख्या डब्ल्यूपी (सी) 788/2021 में याचिकाकर्ताओं की वकील सृष्टि अग्निहोत्री ने 19 अगस्त, 2021 को सुबह 8 बजे राधा स्वामी सत्संग का दौरा किया।

नीचे उनकी रिपोर्ट का एक हिस्सा दिया जा रहा है। जो बताता है कि उजाड़े गए एक लाख से ज्यादा लोगों के अस्थायी आश्रय की स्थिति क्या थी?

"अस्थायी आश्रय"

राधा स्वामी सत्संग के लॉन और लगाए गए पेड़ों के साथ एक बड़ा खुला मैदान है। कपड़े से बना एक बड़ा शेड और एक एस्बेस्ट छत है। शेड का फर्श नम मिट्टी की परत के साथ कच्ची मिट्टी का फर्श है। जब समूह ने दौरा किया तो आश्रय के एक तरफ कच्ची मिट्टी के साथ फर्श को फिर से बनाया जा रहा था। फर्श पर स्ट्रा मैट रखे गए थे। शेड के किनारों पर छत और कपड़े की दीवार के बीच की जगह पर कुछ तिरपाल की चादरें भी थीं। यह बारिश से कुछ सुरक्षा के लिए किया गया था। पुरुषों और महिलाओं के लिए शौचालय इस शेड से 5 मिनट की पैदल दूरी पर हैं। यह शेड और शौचालय उन लोगों के लिए कुल सुविधा है जो केंद्र में रहने के लिए आ सकते हैं। हालांकि, जैसा कि देखा गया है, खोरी गाँव से विस्थापित व्यक्तियों की संख्या जो हजारों में हैं, के हिसाब से इस आश्रय की क्षमता पर्याप्त नहीं है। दस हजार से अधिक ईंटों वाले घर, जिनमें से कई दो से तीन मंजिल के थे, ध्वस्त कर दिए गए हैं। वहां रहने वाली आबादी का सर्वेक्षण नहीं किया गया था। जो लगभग एक लाख से अधिक है।

इसके अलावा राधा स्वामी सत्संग के स्वयंसेवकों ने स्वयं उल्लेख किया कि विस्थापित व्यक्ति इस सुविधा का लाभ उठाना पसंद नहीं करते क्योंकि वे "कुछ निजता" चाहते हैं। **महिलाओं, दूध पिलाने वाली माताओं, बच्चों और बुजुर्गों सहित अस्थायी आश्रय में निजता की कुल कमी के संदर्भ में इसे समझने की जरूरत है, जिनमें से सभी को एक बड़े हॉल में समायोजित किया गया है।**

समूह के दौरे के समय शेड में केवल दो परिवार देखे गए थे: एक बूढ़े माता-पिता और उनके बच्चों का परिवार था। अन्य दो छोटे बच्चे थे जिन्हें उनके माता-पिता ने वहीं छोड़ दिया था जो दिन में काम पर गए थे। बच्चों और उनकी माताओं के लिए शिशुगृह या किसी अन्य सेवा का कोई प्रावधान नहीं था।

भोजन और दवाएं

इसके अतिरिक्त, एक लंगर की सुविधा है जहाँ लंगर के लिए आने वाले लोगों को भोजन परोसा जाता है। वर्तमान में यह सुविधा खोरी गाँव के निवासियों के लिए भी खुली है जो इसका लाभ उठाना चाहते हैं। यह एक आम रसोई से सटा हुआ है जहाँ भोजन तैयार किया जाता है। राधा स्वामी सत्संग और इसमें लंगर की सुविधा, खोरी गाँव स्थल से 3 किलोमीटर की पैदल दूरी पर है। समूह को सूचित किया गया कि तोड़फोड़ शुरू होने के तुरंत बाद के दिनों में, लगभग 500-600 लोग प्रतिदिन लंगर (भोजन) की सुविधा का लाभ उठाने के लिए केंद्र में आते थे। केंद्र ने उन्हें भोजन और पानी उपलब्ध कराया।

यह ध्यान में रखने की जरूरत है कि केंद्र अपने सभी कार्यों के लिए आस-पास के क्षेत्रों के स्वयंसेवकों पर निर्भर है। रसोई के बुनियादी ढांचे और मौजूद मानव संसाधन ध्यान/सत्संग परिसर की सेवा के लिए हैं, न कि बड़ी संख्या में लोगों के लिए राहत शिविर, भले ही केंद्र ने इस भूमिका में कदम रखा हो। वर्तमान में 18 अगस्त को लगभग 200 लोग ही लंगर की सुविधा का लाभ उठा रहे हैं।

स्वास्थ्य डेस्क/औषधालय के बारे में पूछे जाने पर, समूह को बताया गया कि मूल रूप से एक डेस्क स्थापित की गई थी, लेकिन माँग की कमी के कारण वह अब काम नहीं कर रही है। स्वयंसेवकों में से एक ने समझाया कि किसी भी चिकित्सा आवश्यकता के मामले में, स्वास्थ्य सुविधा (सूरजकुंड डिस्पेंसरी) पास में थी और इसलिए कोई भी जरूरतमंद यहाँ के डॉक्टर के बजायपास के केंद्र मे जा सकता था।

नगर निगम, फरीदाबाद (एमसीएफ) पंजीकरण डेस्क

स्वयंसेवकों ने समूह को बताया कि नगर निगम,फ़रीदाबाद (एमसीएफ) के दो अधिकारी एक डेस्क पर बैठे है और वैकल्पिक आवास या पुनर्वास के लिए लगभग 1400 लोगों को पंजीकृत किया। यह कुछ दिनों के लिए किया गया था लेकिन फिर रोक दिया गया था। समूह की यात्रा के समय एमसीएफ का कोई अधिकारी मौके पर मौजूद नहीं था।

निष्कर्ष:

(a) एमसीएफ ने राधा स्वामी सत्संग को तोड़फोड़ से विस्थापित लोगों के लिए राहत और पारगमन आश्रय प्रदान करने के लिए एक स्थान के रूप में परिवर्तित कर दिया है। हालाँकि इस कार्य को करने के लिए राधा स्वामी सत्संग स्थापित या सुसज्जित नहीं है क्योंकि यह स्वयंसेवकों द्वारा चलाया जाता है। वास्तव में हरियाणा राज्य सरकार और नगर निगम फ़रीदाबाद (एमसीएफ) का कर्तव्य है न कि स्वयंसेवी धार्मिक संगठन का।

(b) जिन लोगों के घरों को तोड़ दिया गया है, उनके लिए अस्थायी आश्रय के रूप में दिखाई जाने वाली सुविधायें इन परिवारों को सुरक्षित स्थान प्रदान नहीं करती हैं, और वहाँ वास्तव में किसी भी प्रकार से निजता नही हैं। इसके परिणामस्वरूप विस्थापित परिवारों के पास खोरी गाँव की जगह पर तिरपाल के नीचे रहने और कठोर मानसून के संपर्क में आने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। खोरी गाँव में तोड़फोड़ के मलबे के बीच बड़ी संख्या में परिवार आसमान के नीचे रह रहे हैं क्योंकि उनके पास कहीं और जाने के लिए कोई स्थान ही नहीं है।

(c) राधा स्वामी सत्संग की सुविधाओं में यह सुनिश्चित करने के लिए कोई प्रावधान नहीं है कि लोग खराब मौसम की स्थिति, मच्छरों से सुरक्षित रहें, यहाँ महिलाओं के लिए कोई निजता नहीं है, और यह सुविधा एस्बेस्टस की छत से ढकी एक खुली जगह की प्रकृति की है। यह 'अस्थायी आश्रय' के रूप में योग्य नहीं है।

(राधा स्वामी सत्संग में व्यवस्था की स्थिति)

कालक्रम (टाइमलाइन)

खोरी गांव : तथाकथित पुनर्वास नीति और लोग

– 7 जून, 2021 को सर्वोच्च न्यायालय ने सरीना सरकार बनाम हरियाणा सरकार केस में खोरी गाँव को तोड़ने का आदेश दिया।

– 8 जून, 2021 जून से पूरे खोरी गाँव के चारों तरफ सुरक्षा बलों का पहरा लगा दिया गया। बिजली, पानी की व्यवस्था रोक दी गयी और वहाँ की सभी दुकानें बंद करवा दी गई।

–7 जून, 2021 से 14 जुलाई, 2021 तक सरकार ने खोरी गाँव के मकानों या वहाँ के लोगो का कोई भी जमीनी सर्वे तक नहीं किया।

– सरकार ने जमीनी सर्वे ना करके ड्रोन सर्वे किया गया जिसमे सिर्फ **6,663 घर** बताये गए। **ड्रोन सर्वे** के अनुसार **23 मन्दिर, 5 स्कूल, 12 मस्जिदों समेत 1 चर्च का जिक्र हैं।**

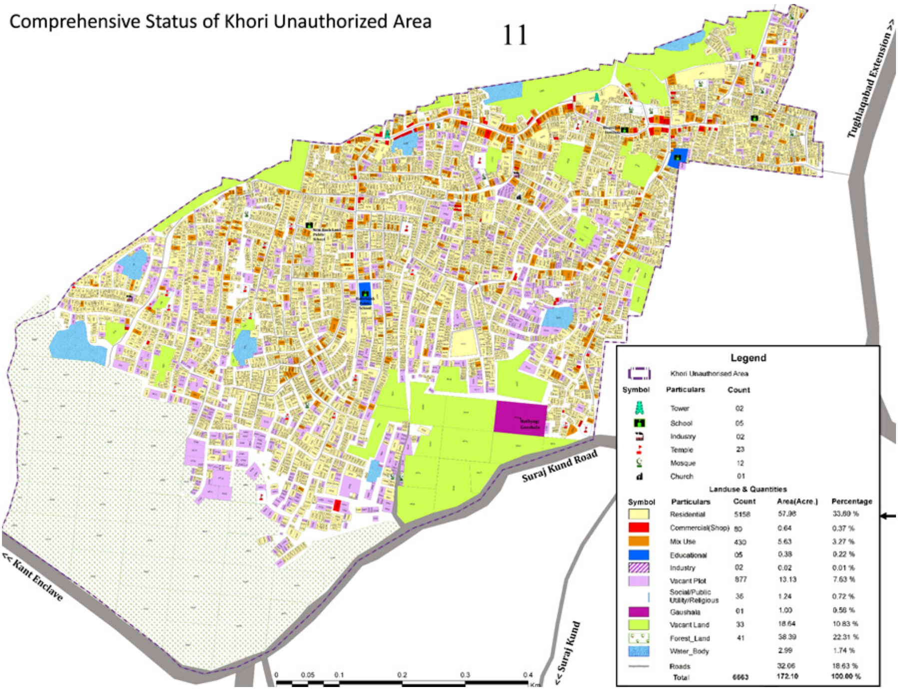

(MCF ने ड्रोन सर्वे का एफिडेविट कोर्ट में जमा कराया)

- जबकि 14 जुलाई, 2021 से ख़ोरी गाँव के 10,000 से ज्यादा घर तोड़ने शुरू किए गए।

- 14 जुलाई, 2021 को हरियाणा के **1400 लोगो के लिये हरियाणा के मुख्यमंत्री** ने डबुआ कॉलोनी के पुराने फ्लैट, पुनर्वास के नाम पर बेचने की घोषणा की।

- जिन लोगों के घर तोड़कर उन्हें पूरी तरह से गरीब और लाचार बनाया गया, उन्होंने कभी अपनी जिंदगी भर की कमाई से भूमि माफिया से जमीनी खरीदी थी।
आज उन गरीब बेघर लोगो से फिर पैसा लेकर खोरी गाँव से लगभग **15 किलोमीटर दूर डबुआ** और बापू नगर में फ्लैट देने की घोषणा हुई।

- **डबुआ और बापू नगर** के फ्लैट 10 साल से भी ज्यादा पुराने हैं जिनमें फ्लैट के नाम पर मात्र जर्जर बिल्डिंग बची है। फ्लैट में न शीशे है, न दरवाजे, न फ्लेश , बिजली और न पानी। यहाँ तक कि सीवर व्यवस्था भी पूरी तरीके से बंद हैं सीढ़ियां टूटी पड़ी हैं। 4 मंजिल के फ्लैट के ऊपर वाले फ्लैट की छत से पानी टपकता था। गंदगी का आलम यह था कि नीचे के फ्लैट में एक 1 फुट से ज्यादा गंदगी थी। सूअर, गाय व कुत्ते वहां के स्थाई निवासी है।

(डबुआ फ्लेट्स में पहले से रहने वाले रहने वाले परिवारों की स्थिति)

– सर्वोच्च न्यायालय में **शांति देवी बनाम भारत सरकार** मुकदमे के तहत नगर निगम, फरीदाबाद पर दबाव बनाया गया। वरिष्ठ अधिवक्ता संजय पारीख जी ने स्वयं वहाँ पर कई बार दौरा किया। इसके बाद स्थिति में सुधार आया। फ्लैट का कब्ज़ा दिए जाने से पहले फ्लैट मालिक को फ्लैट की ढांचागत सुरक्षा दिए जाने की मांग की गई है।

– खोरी गांव से लगभग 3 किलोमीटर दूर राधा स्वामी सत्संग (ये भी वन भूमि पर एक कब्ज़ा है) में 10,000 से ज्यादा मकानो में रहने वाले लोगों के लिए एक छोटा तंबू में रहने और छोटी रसोई से खाने की व्यवस्था की गई। जिसे किसी भी तरह से अस्थायी आश्रय नहीं कहा जा सकता था। खोरी गाँव के लोगो के अस्थायी आश्रय की जिम्मेदारी भी राधास्वामी सत्संग पर डाली गई।

– खोरी गाँव के लोगो को राधा स्वामी सत्संग में रहने के लिए तो कहा गया मगर वो अपने घर का समान वहा नहीं ले जा सकते थे। वहाँ जो खाना मिलता था वो खाने लायक नही होता था और उन्हें खुद से खाना बना कर खाने की अनुमति थी।

– लोगों के घर तोड़ने से पहले घर खाली करने के लिए परिवहन व्यवस्था (Transport) की घोषणा की गई और लोगो की सुविधा के लिए एक मोबाइल नंबर जारी किया गया जिसने शायद ही कभी काम किया। लोग इंतजार करते रहे और उनके सामने उनके घर के साथ उनका समान भी टूट गया।

– सुप्रीम कोर्ट के आदेश के तहत नगर निगम, फरीदाबाद (एमसीएफ) ने पुनर्वास के आवेदन के लिए ई-पोर्टल जारी किया। एमसीएफ ने तो लोगो को इसकी कोई भी सूचना नहीं दी। वकील सृष्टि अग्निहोत्री ने **26 सितंबर को स्वयं इस ई-पोर्टल को खोजा।**

– **ई-पोर्टल पर 15 नवम्बर 2021 तक 5013 लोगों** ने पात्रता के लिए आवेदन किया। ई-पोर्टल पर एडिट ऑप्शन न होने के कारण एक ही व्यक्ति को कई बार फार्म भरना पड़ा। नगर निगम, फरीदाबाद के अनुसार 800 लोगों ने राधा स्वामी सत्संग में जाकर आवेदन दिया था।

– इसके बावजूद भी सभी लोग आवेदन नहीं कर पाए क्योंकि पात्रता के लिऐ जो कागजात मांगे गए थे, वह सभी लोगों के पास नहीं थे। (**1 जनवरी 2021 से पहले का बिजली का बिल, वोटर कार्ड, बड़खल विधान सभा का और परिवार पहचान पत्र- तीनों में से एक**)।

– खोरी गाँव की सीमा रेखा कभी नहीं बनाई गई। नतीजा यह हुआ कि लोग दिल्ली की जमीन जानकर हरियाणा की जमीन पर बसे हुये थे और उनके कागज़ात दिल्ली के थे।

– 15 नवंबर 2021 को पुनर्वास नीति को चुनौती देने वाले मुकदमे का फैसला आया। फैसले में आधार कार्ड और खोरी गाँव का एक सबूत भी पात्रता के लिए आधार माना गया। पात्रता पर अन्तिम फैसले के निर्णय के लिऐ एमसीएफ को जिम्मेदारी दी गई।

– 14 जनवरी, 2022 को 1403 पात्र लोगो की लिस्ट जारी की गई। लोगो से कागजातों के सही होने के प्रमाण के रूप में एक शपथ पत्र मांगा गया और साथ ही उनकी बैंक डिटेल मांगी गई।

– 18 जनवरी 2022 में प्रख्यात सूरजकुंड मेले की वीआईपी पार्किंग बनाने के लिए खोरी गाँव के एक हिस्से को पूरी तरह समतल कर दिया गया। पार्किग के निर्माण से लेकर पार्किंग के इस्तेमाल तक, वन कानूनों का पूरा उल्लंघन हुआ।

– 30 जनवरी 2022 तक लोगो से बैंक डिटेल के साथ शपथ पत्र लिए गए। लोगो का समय, उनके एक दिन की दिहाड़ी व पैसे खर्च हुए। लोगों को किसी तरह की कोई रसीद भी नहीं दी गई।

– 7 मार्च, 2022 को लगभग 1200 लोगो को आर्थिक सहायता के लिए सही पात्र माना गया।

– 10 जुलाई, 2022 तक लगभग 600 लोगों को सिर्फ 6 महीने का आर्थिक सहायता मिली परन्तु बाकी लोगो की आर्थिक सहायता की कोई जानकारी कहीं पर उपलब्ध नहीं है।

– सुप्रीम कोर्ट के 15 नवंबर, 2021 के आदेश की पालना में एमसीएफ ने 20 जून से 29 जून 2022 तक जिन लोगों की पहले पात्रता रद्द कर दी गई थी, उनको दोबारा अपनी बात रखने का मौका दिया।

– इसकी कोई जानकारी पब्लिक डोमेन में नहीं है कि कितने लोगों ने दोबारा अपने कागजात जमा कराये और लोगों को इससे सम्बंधित किसी तरह की कोई रसीद भी नहीं दी गई।

– एमसीएफ ने जून, 2022 के आखिरी हफ्ते में ऐसे 320 लोगो की लिस्ट जारी की जिनकी बैंक डिटेल्स गलत है।

– 10 अगस्त, 2021 तक पूरा खोरी गाँव तोड़ दिया गया था। उसके बाद में जो लोग वहाँ से कहीं जा नही पाए, उनके रहने की जगह को, भारी संख्या में पुलिस बल, नगर निगम व वन विभाग के अधिकारी जेसीबी मशीनों से लगातार तोड़ते रहे।

– 14 जनवरी, 2022 को 1403 पात्र लोगो की जो लिस्ट जारी की गई थी अब उसको घटा कर पुनर्वास के लिए सिर्फ 1009 लोगो को पात्र माना गया है ।

– हर बार तोड़-फोड़ के दौरान खोरी गाँव निवासियों, ख़ासकर महिलाओं के साथ बहुत अपमानित व्यवहार किया गया। यहाँ तक कि मारपीट भी की गई जिसमे लोग घायल हुए। लोगों पर लाठियां बरसाई गई, उन पर झूठे मुकदमे दायर किए गए और उनके मानवाधिकारों का पूरी तरह उल्लंघन किया गया।

- सभी पात्र लोगो को सोलेसियम राशि पूरी नहीं मिलने के सम्बंध में टीम साथी ने आयुक्त को हस्ताक्षर करके पत्र सोपा ।

- न्यायालय ने सोलेसियम राशि पोजिशन मिलने तक जारी रखने के लिए कहाँ । परंतु अभी तक सभी परिवारों को पूरा सोलेरियम राशि नहीं मिला है ।

- **13 अक्टूबर 2022** संजय पारीख जी ने कहा था डबुआ के फ्लैट रहने योग्य नहीं है इस आधार पर सुप्रीम कोर्ट ने सिविल इंजीनियर कंकन चक्रवर्ती, स्ट्रेक्चरल इंजीनियर कस्तूर चक्रवर्ती और आर्किटेक्ट इप्सिता मंडल की कमेटी गठित की। कोर्ट ने तीनों को मौके का निरीक्षण कर रिपोर्ट देने को कहा है।
इस पर 12 तारीख शनिवार 2022 को डबुआ में सुप्रीम कोर्ट के आदेश अनुसार फ्लैट स्ट्रक्चर को लेकर निरक्षण किया गया । इस दौरान नगर निगम कमिश्नर जितेंद्र दहिया, ज्वाइंट कमिश्नर गौरव अंतिल, जेईई, एसडीओ, अरुण भारद्वाज नगर निगम के वकील, याचिकाकर्ता, खोरी गांव के वकील तृप्ति और सृष्टि जी , टीम साथी, मीडिया, ख़ोरी निवासी सभी लोग मौजूद रहे ।

- 12 नवम्बर 2022 को MCF आयुक्त ने वादा किया 45 दिन के अंदर सब सही कर दिया जाएगा ।
इससे यह मालूम होता हैं अभी फ्लैट सही नहीं, पानी नहीं , बिजली नहीं, सीवर लाईन सही नही जिसके लिए उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया हैं।

- नवम्बर में ही 280 लिस्ट के बारे में मैं नगर निगम द्वारा और अखबारों के द्वारा मालूम चला की पात्र सूची में और लोगों को शामिल किया जाना है।

- 10 दिसम्बर 2022 को ख़ोरी गाँव वासियों द्वारा नफरत के खिलाफ पैदल यात्रा निकाली गई ।
"नफ़रत छोड़ो, संविधान बचाओं"
तोड़फोड़ केवल ख़ोरी गाँव मे किया गया। बड़े लोगो के निर्माण PLPA जमीन पर आज भी खड़े हैं। इस यात्रा में माँग रखी गई । पीएलपीए भूमि पर होटल, फार्महाउस और संस्थानों जैसे अन्य उच्च-अंतविकास को खोरी गांव और अन्य बस्तियों
के समान माना जाना चाहिए; उन्हें एक साथ ध्वस्त किया जाना चाहिए। अगर केंद्र सरकार फार्महाउसों को वैध करने के बारे में सोच रही है, फिर उन्हें खोरी गांव के निवासियों को उस भूमि पर पुनर्वास प्रदान करना चाहिए जहां वो रहते थे - **खोरी गांव में ही ।**

- जनवरी, 2023 अभी तक पुनर्वास की दूसरी लिस्ट जारी नहीं की गई है और एमसीएफ ने **20 जून से 29 जून 2022 के दोरान राधास्वामी** में जो सुनवाई की थी **7 महीने** बित जाने के बाद भी वह लिस्ट जारी नहीं की गई ।

– जनवरी, 2023 **19 महीने** बित जाने के बाद भी डबुआ की परिस्थितियों में ज्यादा बदलाव नहीं आया हैं । जिसकी वजह से 1009 में से सिर्फ कुछ ही परिवार जा पाए हैं

- जनवरी 2023 जब सभी लोगों का पुनर्वास नहीं हो पाया है तो ज्यादातर परिवार पुनर्वास की प्रक्रिया से खुश नहीं है ।

- खोरी गांव वासी 30 जनवरी 2023 को जंतर मंतर जा रहे हैं ताकि अपने साथ हुए अन्याय को फिर से उजागर कर सके ।

- जनवरी 2023 अभी तक ख़ोरी गाँव की जो परिस्थितियां है उस आधार पर खोरी गांव के प्रति नगर निगम व सरकार का भेदभाव पूर्ण रवैया ही रहा है आगे चलकर न्यायालय या सरकार इस पीड़ा को समझें कुछ नहीं कहा जा सकता । संघर्ष जारी हैं ....

वास्तविकता यह है कि:

7 जून, 2021 को सर्वोच्च न्यायालय के ख़ोरी गाँव तोड़ने के आदेश का पालन तुरन्त किया गया । अदालत ने भी अपने आदेशों में बार-बार खाली हुई जमीन पर दोबारा कब्जा रोकने का आदेश दिया। जिसका पालन एमसीएफ और हरियाणा सरकार ने किया मगर तथाकथित पुनर्वास का काम आज तक भी नहीं हुआ। लोगों के हक की बात तो बहुत दूर है।

14 जुलाई 2021 को हरियाणा के मुख्यमंत्री ने कहा था कि खोरी गाँव में हरियाणा के निवासियों को जिसमे 1400 लोगों को वह पुनर्वास देंगे। उसी संख्या के आस पास अभी तक सारे काम घूमते हुए नजर आते हैं।

लोगों के पुनर्वास व उनके अधिकारों की रक्षा के लिए न तो कोई राजनीतिक इच्छाशक्ति नजर आती है और न ही किसी प्रकार की प्रशासनिक स्तर पर कोई तत्परता दिखाई देती है। सरकारी महकमे में पुनर्वास का काम करने वाले उतने ज्यादा लोग नजर नही आते हैं जितने कि लोगों का घर उजाड़ने में दिखाई देते थे।

विमल भाई

02 खोरी के लोगो की कहानी उनकी ज़ुबानी

(आपबीती और संघर्ष की कहानियाँ)

(आशियाना बनाने में मेहनतकश अपनी पूरी जिंदगी लगा देता हैं)

वर्गभेद

हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल जी व मौजूदा सरकार खोरी गाँव जैसी बस्तियों और फार्म हाउस, हाइ डेवलपमेंट सोसाइटी, बड़े होटल,आश्रम के बारे में, वन भूमि के मुद्दे पर अलग-अलग सोच रखते हैं।

जब माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने सितंबर 2018 में सूरजकुंड के पास अरावली पर हुए निर्माण **कांत एन्क्लेव** को तोड़ने का आदेश दिया था, तब हरियाणा विधानसभा में मुख्यमंत्री जी ने कहा था कि इस तरह तो बहुत सारी जमीनें वन भूमि के तहत आ जाएगी। इसके बाद **विधानसभा में 27 फरवरी 2019 को पंजाब भूमि संरक्षण कानून, 1900 में संशोधन पारित किया गया।** जिससे वन क्षेत्र में विकास कार्य किए जा सके। मार्च 2019 सर्वोच्च न्यायालय ने दायित्व लेते हुए इस कानून पर रोक लगा दिया और कांत एन्क्लेव को तोड़ने के बदले भारी भरकम मुआवजा चुकाया गया।

उसके बाद जब **7 जून, 2021 को खोरी गाँव** के तोड़ने का आदेश दिया तो मुख्यमंत्री साहब ने कहा यह तो सर्वोच्च न्यायालय का आदेश है। जिसका पालन किया जाएगा जो हरियाणा के निवासी है उनका पुनर्वास किया जायेगा । जबकि खोरी गाँव में ज्यादातर परिवार प्रवासी मजदूर है जिनके पास अन्य राज्यों के कागज थे या फिर दिल्ली राज्य के कागज थे क्योंकि यह बस्ती दिल्ली और हरियाणा बॉर्डर सीमा पर है जिसकी वजह से दिल्ली सरकार ने यहां सुविधा दी हुई थी । **आदेश आने से पहले कभी भी दिल्ली और हरियाणा का मापन नहीं किया गया था ।**

वहीं दूसरी तरफ जब फार्म हाउस और उच्च संस्थानों को तोड़ने की बात न्यायालय द्वारा CPW@10294/2013 आदेश **23 जुलाई 2021 को वन क्षेत्र** से सभी अनधिकृत संरचनाओं को हटाने का आदेश दिया तो हरियाणा सरकार की तरफ से शपथ पत्र लगाकर कहा गया कि अगर ऐसा होता है तो गुड़गांव सहित फरीदाबाद का 40 प्रतिशत हिस्सा तोड़ना पड़ेगा। यह तो नामुमकिन है। अभी तक इन संरचनाओं को हटाया नहीं गया है।

जबकि सरकार हमेशा से ही न्यायालय के आदेश के विपरीत, वन क्षेत्र में विकास गतिविधियां करने के पक्ष में रही है। चाहे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में मास्टर प्लान 2041 के तहत लाना हो या विश्व की सबसे बड़ी सोलर योजना भी अरावली क्षेत्र में लगानी हो और अब केंद्रीय पर्यावरण मंत्री के ऊपर निर्भर हैं **वन क्षेत्र में विकास गतिविधियां को किसके लिए अनुमति दी जाए और किसके लिए नहीं यह सवाल भी रहेगा ?**

ये अमीर और गरीबी के बीच का वर्ग भेद है।

- **अरविंद कुमार(खोरी गाँव)**

फरजाना और मंजूर की कहानी

फरजाना और मंजूर, खोरी गांव में बस 50 गज की जमीन पर मकान बनाकर रहते थे। बिहार के भागलपुर जिले में मंजूर पीडब्ल्यूडी की सड़क के किनारे एक छोटी सी झोपड़ी में अपनेराजमिस्त्री पिता के साथ रहता था। उनके भाई बड़े हुए तो कहीं-कहीं काम पर गए। मंजूर भी दिल्ली में आकर तुगलकाबाद में सिलाई का काम करता था। जुलाई 2002 में फरजाना से मंज़ूर की शादी हुई और उसके बाद उनके 3 बच्चे हुए। शादी तो हुई, पर घर छोटा होने की वजह से पत्नी मायके में ही रहती थी।

मंजूर को "ओरियंट क्राफ्ट कंपनी" में कटिंग मास्टर का काम मिला। परन्तु कंपनी बंद हुई तो उसने फिर अपने आप मशीन लगाकर काम शुरू किया। उसे किसी ने बताया कि खोरी गाँव में सस्ती जमीन मिल रही है तो उसने खोरी गाँव, बंगाली कॉलोनी में 50 गज का प्लॉट खरीदकर एक घर बनाने की शुरुआत की। तब वहां सिर्फ पांच बंगाली परिवार रहते थे। घर बनाने के लिए मंजूर ने अपने भाई, बहन से कुछ उधारी ली और कुछ अपनी बचत को लगाया जो उसको ओरियंट क्राफ्ट कंपनी बंद होने पर मिली थी। बस वही तीन लाख और कर्जे से एक छोटा सा मकान बनाया। इसके बाद फरजाना भी दिल्ली आ गई । उसकी जिंदगी का यह पहला घर था। छोटा सा घर था, पर अपना था जिसमे दोनों ने मिलकर सिलाई की मशीनें लगाई। खूब काम करने वाली फरजाना, मंजूर के साथ लगी रही और दोनों का एक छोटा आशियाना बन गया। मेहनतकश जिंदगी में कुछ खुशियों की उम्मीद जगी।

लॉकडाउन में जब काम बंद हुआ तो नुकसान तो हुआ, पर वह अपने घर में थे। जब दिल्ली और देश भर से मजदूर गाँव की ओर भाग रहे थे, तब फरजाना और मंजूर अपने घर की छत के नीचे अपनी गुजर-बसर कर पाए।

2021 की ईद पर फरजाना और मंजूर गाँव चले गए। सोचा थोड़ी बचत है जिससे वहाँ पर भी बूढ़े मां-बाप के लिए दीवारें खड़ी करके एक घर बना दें। फरजाना वहाँ काम करवा ही रही थी कि दिल्ली से फोन आने शुरू हो गए कि वापस आओ, खोरी गाँव तोड़ने का आदेश आ गया हैं और सब लोग अपना सामान समेट रहे हैं। उसने सोचा कि ऐसा तो कई बार सुनते ही रहे है। इतना क्यों तंग कर रहे हैं। फिर लोगों ने जब बार-बार फोन किया तो लगा कि मामला कुछ गंभीर ही है। मंज़ूर-फरज़ाना का गाँव, खोरी से 30 घंटे की दूरी पर हैं। फरज़ाना को बहुत मुश्किल से वापिस आने का टिकट मिला और फिर वह खोरी गाँव पहुँची। वहाँ तो पूरा नजारा ही बदला हुआ था। खोरी गाँव में सब तरफ दहशत फैली हुई थी । गाँव के चारों तरफ और गाँव के अंदर भी बंदूक और लाठी लेकर कहीं पुलिस बैठी हुई थी तो कहीं घूम रही थी। कहीं लोग अपने सामान लेकर के भाग रहे थे तो कोई कबाड़ी को औने पौने दाम में समान बेचे जा रहा था । कबाड़ी जगह-जगह कच्ची दुकानें खोल कर बैठ गए थे।

सारे खोरी गाँव में बहुत सारा सामान लोगों ने कबाड़ी वाले को बेचा क्योंकि कमरे का किराया बहुत महंगा था और एक छोटा कमरा किराए पर मिलता तो उसमें सारा सामान आ ही नहीं पाता। कमरे में बेड रखने की जगह नही थी,बस जरूरत भर का समान ही किराए के कमरे में रखा जा सकता था। बाकी सामान खोरी गाँव के मेहनतकश मजदूरों ने बहुत ही कम दामों में कबाड़ी वालों को बेचा और बहुत कुछ तो बर्बाद ही हुआ।

मेहनत से तिनका तिनका जोड़ कर लोगो ने अपनी गृहस्थी बनाई थी। अब घर का सामान कहाँ लेकर जायें? मशीनें कहाँ लेकर जाए ? जो गृहस्थी इतनी मेहनत से बनाई और सजाई थी, वह टूट गई तो अब उसे कहाँ समेट कर ले जाए?

खोरी गाँव, हरियाणा के बगल में ही चुंगी नंबर 3 दिल्ली का इलाका है। मकान टूटने के बाद खोरी गाँव के ज्यादातर बाशिंदों ने वहीं आसपास किराए पर कमरे लेने शुरू कर दिए थे। वहाँ कमरों के किराए भी दुगने हो गए थे, जिससे फरजाना को कहीं कमरा नहीं मिला। पुलिस वाले रोज आकर उससे पूछते कि सामान कब हटा रही हो?

अंत में बुलडोजर गली के मुहाने तक आ गया। एक एक गली में 13-14 बुलडोजर एक साथ आते थे। कहीं से भी तोड़ना शुरू करते थे। जो घर कितनी उम्मीदों से, कितनी मेहनत से, कैसे कैसे परेशानियाँ झेल कर बनाया था? वह घर उसके सामने ही तोड़ दिया गया। फरज़ाना-मंज़ूर के सामने ये एक बहुत बड़ी समस्या थी कि सामान कैसे बचायें। अगर वह सामान बाहर कहीं गली में रखते तो फिर बुलडोजर आ जाता उनका काफी सामान टूटा। दोनों को लगा कि अब बचाएं तो क्या बचाएं? तब सोचा मशीनें बचा लेते हैं। आगे की कमाई का कुछ रास्ता रहेगा। ऊपर से रोज बारिश हो रही थीं जिसने परेशानी को और ज्यादा बढ़ा दिया। उन्हें कहीं से प्लास्टिक मिला जिससे उन्होंने मशीनों को ढक दिया।

उनके खाने पीने का कोई ठिकाना नहीं था और न ही कमाई का कोई जरिया । लॉकडाउन ने वैसे ही कमर तोड़ रखी थी। अब उनके सामने उनका घर टूट रहा है। इस स्थिति में चूल्हा भी कैसे जलता? दिल्ली से "अक्षय पात्र" संस्था वाले खाना देकर जाते जिसको खोरी गाँव के युवा वहाँ के लोगो तक कभी दिन में या रात में पुलिस से बचकर पहुँचाते। खाना दोपहर के 1:30 - 2:00 बजे आता, तब जाकर खाना खाते। उसमे से थोड़ा बचा लेते थे, तो रात को भी वही खा लेते। इसी तरह महीना बीता। मशीनों में जंग लगा और लकड़ी का सामान तो टूट ही गया। लकड़ी का सामान सबसे ज्यादा था, जो टूटा। जो बचा भी वो बारिश में भीग-भीग कर खराब हो गया जिस कारण वह बिक भी नहीं पाया।

मदद करने वाला खुद ही मदद का मोहताज हो गया था। आसपास सब की वही स्थिति थी। उनकी जान पहचान की दुनिया में खोरी गाँव के ही लोग थे जो खुद भी उसी की तरह की परिस्थिति में बर्बाद हुए। फरजाना की गृहस्थी खत्म हो गयी और उसके सपने जमींदोज हो गए।

एक घर जो कुछ साल ही सुख दे पाया वह घर भी खत्म हो गया और गाँव के घर की भी बस दीवार खड़ी हो पाई।

दोनों पति-पत्नी के मन में बना घर टूट गया। फरजाना दिन में सामान के साथ और महिलाओं के पास बैठती। वे सब एक दूसरे से वही बातें कहती, वही बात सुनती। मगर उनकी समस्या का हल कहीं नहीं था। पूरा खोरी गाँव जो कि लोगों की मेहनत की कमाई से बनी एक प्यारी सी बस्ती थी। वह टूटे घरों, टूटे सपनों, टूटे दिलों और टूटे भविष्य की कहानी की तरह बिखरी पड़ी थी।

महीने भर बाद फरजाना को मुश्किल से ₹ 3500 में चुंगी नंबर 3 पर एक छोटी सी दुकान मिली। वही सिलाई मशीन रखी और कुछ काम शुरु किया जिससे रोटी का कुछ जुगाड़ शुरू हुआ। मेहनती पति- पत्नी, दिन-रात काम भी करते और उसी में बच्चों को भी पालते। फरजाना कहती है कि सबकी हालत इस कदर खराब हुई है कि 3 साल के छोटे बच्चे भी कपड़ों पर सितारे चिपकाने का काम कर रहे हैं।

फरजाना पर जो बीती वही खोरी गाँव के हजारों परिवारों पर भी बीती। खोरी गाँव में लगभग डेढ़ सौ लोगों ने सिलाई की मशीने बिठा रखी थी और यहाँ के हिंदू-मुसलमान दोनों आसपास के कारखानों का काम करते थे।

पुलिस ने लोगो से उनका मकान बनाते समय हर मकान बनाने के और यहाँ तक कि हर बार मकान मे कुछ भी काम करवाने के पैसे लिये। वन विभाग वाले भी आते थे और वो भी पैसा लेते थे। जब कभी मकान में एक ईंट भी चढ़ाई तो सभी विभाग वाले आकर पैसा लेते थे। यहाँ आसपास के रसूख वाले खास करके अड़ंगपुर गांव के गुर्जरों का बहुत दबदबा रहा है। बिजली की सप्लाई व पानी टैंकर उनके ही चलते रहे। दिल्ली से बिजली चोरी करके खोरी गाँव में वही सप्लाई करते रहे जिसका वह बिजली की प्रति यूनिट ₹ 12 लेते थे ।

यहाँ पर कोई तार-बाड़ नहीं, कोई दीवार नहीं जो यह बताती कि दिल्ली और हरियाणा में कहाँ अंतर है या फिर यह जंगल की जमीन है। बस गरीबों को मुँह जबानी किसी छोटे कागज पर लिखकर जमीने दे दी और उन्होंने किराए की मार से बचने के लिए जमा पूंजी और कर्जे से जमीन खरीद के उस पर मकान बना लिए थे। मगर उन सबके पास हरियाणा का कोई सबूत वाला कागज नहीं रहा और न ही आधार कार्ड था।

फरजाना मंजूर की भी यही स्थिति थी। सब सबूत दिल्ली के थे। बस मंजूर का वोटर कार्ड जरूर हरियाणा का था। मगर हरियाणा सरकार की ओर से स्कूल या कोई और सुविधा नहीं थी इसलिए फरजाना को दिल्ली का आधार कार्ड बनवाना पड़ा। उस आधार कार्ड से ही फिर बच्चों को स्कूल में दाखिला मिला क्योंकि सरकारी स्कूल तो दिल्ली में ही थे।

अब मंजूर- फरजाना अपनी जिंदगी नए सिरे से फिर बना रहे हैं।वो सिलाई जानते हैं और बस अपनी मेहनत उसी में लगा रहे हैं।वे छोटे से कमरे में सिलाई भी करते है और रहते भी है और उसी कमरे में बच्चे भी पढ़ते हैं।वह भविष्य को फिर से अपनी मेहनत से खड़ा करने की कोशिश कर रहे है।

मेहनतकश इंसान आखिर सरकार से कितना लड़ेगा, आखिरकार उसे जिंदगी भी तो जीनी है। वह इसे किस्मत का खेल सोच कर तसल्ली कर लेता है और आगे बढ़ता है। वह बहुत संघर्ष नहीं कर सकता और यह बात सरकार भी जानती हैं। न्यायालय भी सच्चाई को जानता है, भले ही वो संविधान के पन्नों को कानूनो की उल्टी व्याख्याओं से ढक दे।

मंजूर-फरजाना जैसे सैकड़ों सिलाई मजदूरो की मेहनत और उनकी खुशियों से भरे लगभग 10 से 20 साल अदालत ने खत्म कर दिए।

- **विमल भाई**

शिक्षा: युवा सुमित

ईट, सीमेंट, मिट्टी, पत्थर, बांस, बल्ली, से बनाए ढांचे ही घर नहीं होते ये बात सही है मगर फिर भी वह ढांचे टूट जाएं तो भी घर बिखर जाता है।

ऐसा ही 19 साल के सुमित के साथ हुआ। खोरी गाँव में बंगाली कॉलोनी के पास गड्ढा कॉलोनी में उसके पिताजी ने बरसों पहले आकर जमीन खरीदी। किसी ने बताया कि खोरी गाँव में सस्ती जमीन है और वह जमीन दिल्ली में आती है। मकान का किराया देने से अच्छा था कि कि कहीं जमीन ले ली जाए।

एक पड़ोसी के कहने पर 60 गज जमीन ली। यह बदरपुर-महरौली रोड पर दिल्ली हरियाणा की चुंगी नंबर 3 से बिल्कुल सटा हुआ इलाका था। बाद में मालूम हुआ कि यह जंगल की जमीन है। धीरे-धीरे वहाँ ईंटे खड़ी की और मकान की थोड़ी सुविधा बनी। साथ ही रहने के लिए कुछ सामान इकट्ठा हुआ। परिवार में कमाने वाले सिर्फ पिताजी ही है जो किसी के घर पर कार चलाते हैं। पूरा परिवार चलाने का खर्च पिता के कंधों पर ही हैं। मां की तबीयत ठीक नहीं रहती है।

14 जुलाई से जब नगर निगम फ़रीदाबाद ने मकान तोडना शुरू किया तो उन्होंने सोचा कि क्या हमारा घर भी टूटेगा? मगर हम तो दिल्ली में हैं और आखिर वह दिन आया कि उनका मकान तोड़ दिया गया।

सुमित के पिता ने किसी तरह एक ट्रक में रखकर घर की बड़ी जरूरत के सामान गाँव भेजें। गाँव में भी घर छोटा है। कुछ सामान यहाँ पर ही इधर-उधर किया और जरूरत का सामान लेकर कहीं पर झुग्गी डाली। अब सुमित और उसके भाई-बहन बिना बिजली और पानी की व्यवस्था के रहने लगे। उनके भविष्य पर एक प्रश्न ही लग गया। बीमार मां को रोज दिन में अस्पताल भी ले जाना है और रात में पढ़ाई हो नहीं सकती। ऐसी परिस्थियों में आगे भविष्य का कैसे सोचेंगे? अभी तो आज की चिंता में दिन बीत जाता है।

मोबाइल किसी के घर से चार्ज करें तो रात को उसी रोशनी में पढ़ना और दूसरे काम किये जा सकते है। सुमित ने इग्नू में फर्स्ट ईयर में एडमिशन लिया है। उसका एक छोटा भाई और एक बहन भी है जो कि छोटी क्लास मे पढ़ते है । सुमित के घर के आसपास के सभी बच्चों की पढ़ाई का यही आलम है। नगर निगम की जेसीबी जब घर तोड़ने आती है तो पुलिस वाले उनसे गंदी भाषा में बोलते है मगर उन्हें जवाब नहीं दिया जाता।

खोरी गांव के सैकड़ों-हजारों बच्चों की यही कहानी है।

(घर टूटने के बाद खाने के लिए लाइन लगाते मेहनतकश परिवार)

ऐसे अनेक बच्चे विशाल, अनिकेत, सोनू, ऋषभ, रोहित, नासिर, मुस्कान और भी अपने आज को संभालने के लिए अपने कल को खोते जा रहे हैं। कल को संभाले तो आज का दिन कैसे पूरा हो?

ये बच्चे रोजी- रोटी का प्रबंध करने के लिए कहीं छोटा काम करते हैं, अपनी पढ़ाई करते हैं, और साथ में अपने खोरी गाँव के लिए चिंता भी करते हैं।

छोटी छोटी खुशियाँ, मस्तियाँ जो इस उम्र में बच्चों की होती हैं। उन्हें समेट कर, घर चलाने की चिंता को साथ में लेकर एक बड़े संघर्ष के लिए ये युवा चल पड़े हैं।

- **विमल भाई**

अकेला संघर्ष : अनीता देवी

अनीता देवी दस साल से ज्यादा समय से खोरी गाँव में अपने तीन बच्चों साथ रहती थीं। उनके पति उन्हें काफी समय पहले छोड़कर चले गए। तीन बच्चों के साथ एक अकेली महिला ने अपना घर बनाया। इतनी परेशानी थी मगर फिर भी वह अपने बच्चों के साथ खुश थी क्योंकि आस-पड़ोस में एक अपना माहौल था,सभी लोग जानते थे और वह असुरक्षित नहीं थी। वह दिन में अपना घर का काम करती और बाहर भी काम करती थी। वह रेडीमेड कपड़ों का काम करती,जो उनका दिन-रात का काम था। पीस चैक करना करना, सैम्पल तैयार करना, महिलाओं तक उसे पहुँचाना और फिर कंपनी में वापिस जमा करना। ये सारे काम करने के साथ-साथ बच्चों की भी देखभाल, एक महिला के लिए चुनौती भरी जिंदगी थी। सारा दिन काम करो, दौड़ते रहो, शाम में फिर घर आओ और लंबी साँस भरके अपने घर का काम करो और अगली सुबह फिर से काम में लग जाओ। उनकी यही ज़िन्दगी थी मगर इन सबके बावजूद तसल्ली थी कि सिर पर एक छत थी। एक छत का होना इन सारी परेशानियों के होते हुए भी एक बहुत बड़ी ताक़त थी। उन्हें इस बात की सुकून था कि वो अपने घर में थी। अनीता की जिंदगी संघर्ष, चुनौतीपूर्ण होने के बावजूद अच्छी चल रही थी, वह खुश थी। अनीता ने कभी सोचा भी नहीं था कि उन्हें अचानक ऐसे दिन देखने को मिलेंगे और उनका घर तोड़ दिया जायेगा। परन्तु ऐसा भी दिन आया और नगर निगम, फरीदाबाद द्वारा उनका घर तोड़ दिया गया।

जेसीबी से उनका घर तोड़ दिया गया। वह अपने घर को टूटते देखती रही। वह अपने बच्चों और सामान को लेकर के निकली और पास में ही चुंगी नं 2 पर 4 हजार रुपये मे कमरा किराये पर लिया। जहाँ वह अपनी दो बेटियों और एक बेटे के साथ रहीं। उनकी बेटी हमदर्द, संगम विहार केंद्रीय विद्यालय में पढ़ती हैं और बेटा लाल कुआँ के सरकारी स्कूल में पढ़ता हैं। घर तोड़े जाने के बाद, शुरू में अनीता के पास कोई काम नहीं रहा जिससे घर चलाना, बच्चों की फीस भरना भी कठिन हो गया। दिल, दिमाग और शरीर तीनों का कोई तारतम्य नहीं बच रहा था। फिर बहुत ही मुश्किल से उन्होंने अपने आप को सँभाला।

अनीता जैसी महिलाएँ जो अकेली हैं और अपने जीवन के संघर्ष को अकेले झेल रही हैं। ऐसी महिलाओं के लिए खोरी गाँव एक आश्रय भी था। वो उनके लिए पारंपरिक गाँव जैसा नहीं था मगर वह एक ऐसा रहवास था जहाँ पर महिलाएँ आपस में मिलती थी, एक दूसरे का सुख-दुख बाँटती थी और एक दूसरे को संभालती थी।

आज अनीता जैसी बहन-बेटियाँ बाहर निकलीं और प्रश्न पूछती हैं कि “बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" की असलियत कहाँ गई?” उनका प्रश्न सबके सामने हैं, परन्तु औरों की तरह उनका भी प्रश्न अनुत्तरित है।

- बीना ज्ञान

ज़िंदगी वापिस वही : रजनी

दार्जिलिंग की रहने वाली रजनी की कहानी छोटी-सी हैं, मगर बहुत अलग हैं। उसका पति देव कुमार सेठ बीमार रहता था और लगातार बीमार रहने के कारण उसकी मृत्यु हो गयी। उसकी कोई संतान भी नहीं थी तथा पति की मृत्यु से वह पूरी तरह अकेली, परेशान और हताश हो गयी थी। रजनी की बहन खोरी गाँव में रहती थी। उससे दीदी का दुख नहीं देखा गया तो वह अपनी दीदी को अपने साथ खोरी ले आई और दिसम्बर 2020 में अपने घर के सामने 2 लाख 80 हज़ार में एक 30 गज का ज़मीन का टुकड़ा खरीदवा करके दे दिया।

रजनी ने अपने सारे दुखों में दिल में दबाते हुए वहाँ एक छोटी-सी समोसे की दुकान लगाई जिससे महीने में पाँच-छह हज़ार की दुकानदारी हो रही थी और इस तरह कमा-खा के उसकी जिंदगी चल पड़ी। सात महीने ही हुए थे और अचानक 7 जून को ऑर्डर आ गया कि खोरी टूटेगी। अब खोरी टूटने वाली है यह सोचकर रजनी फिर से सदमे में चली गयी। दीदी की यह हालत रजनी की बहन से देखी नहीं जा रही थी तो वह उसे अस्पताल में इलाज कराने को ले गई। अब वहाँ पर पैसों के बिना ईलाज भी कैसे होता और क्या ही होता?

सब गरीबों का सहारा तो अपने भाई-बंधु ही होते हैं जो एक- दूसरे की मदद करते है। रजनी की भी मदद इसी प्रकार हुई और उसके बाद रजनी वापिस तुगलकाबाद के एक छोटे कमरे में किराये पर चली गई। रजनी का जो पूरा सपना था, उसकी जो जो पूरी जिंदगी थी, घूम फिरकर वापिस वहीं आ गई जहाँ से वो चली थी। जो बनना था वो बन नहीं पाया और जो बचा था, वो भी खत्म हो गया। अब इस समय रजनी कहाँ जाए, वह कब तक किराया दे पाएगी, कब तक कमाएगी और आगे कहाँ जाएगी? यह कहानी लिखने के समय रजनी कहाँ होगी वो हम नहीं बता पाएँगे। खोरी गाँव के लोग ऐसे ही कही खो गए है।

- बीना ज्ञान

घर मन सपना टूटा : बीना रानी

बीना रानी की कहानी भी एक उस महिला मज़दूर की हैं जो दिल्ली में किराया नहीं दे पाती और उसे समझ नही आता कि वह कहाँ जाए, कैसे रहे ? बीना रानी के चार बच्चे हैं। वह वर्ष 1996 में अपने पति प्रकाश के साथ दिल्ली आई। पति ने फल का काम शुरू किय और बीना भी एक कंपनी में धागा काटने का काम करने लगी। उसे लगभग आठ हजार रूपए महीना मिलता था। चार बच्चों और पति के साथ घर का किराया दे पाना बहुत मुश्किल था और मुश्किल से ही बच्चों का लालन-पालन भी होता था। फिर उसने अपने बच्चो का सरकारी स्कूल में नाम की लिखवाया।

जब सब कुछ थोड़ा ठीक चलने लगा तो बीना की तबीयत अचानक खराब होने लगी। उसे थोड़ी दिमागी खराबी थी। धीरे-धीरे परेशानियाँ बढ़ती गई और वर्ष 2000 में इलाज़ कराया तब जाकर बीना थोड़ी ठीक हुई। वर्ष 2006 में जिंदगी में बहुत उतार चढ़ाव आते रहें और किसी तरह बीना ठीक होने लगी परन्तु जो कुछ कमाया था सब डॉक्टर के पास खर्च हो गया। तबीयत खराब रहने के कारण घर में काम करने के लिए कोई नहीं था तो घर में तनाव बढ़ता चला गया और बीना का पति झगड़ा करके उसे अकेला छोड़कर एक दिन दिल्ली से चला गया। अब चार बच्चे, घर किराया, खाने का खर्चा ये सब अकेली बीना पर आ गया जिसे उसने हिम्मत से पूरा किया। वह किराए के मकान में भी रहीं और अपने चार बच्चो को पूरी हिम्मत से संभालती रही। उसे कहीं न कहीं कोई काम मिल जाता और धीरे-धीरे वह 16 हजार रुपये महीना कमाने लगीं । उसने जो रूपये कमाएँ, उसका एक-एक पैसा जोड़ा और थोड़ी ज़मीन खरीद कर खोरी गाँव में एक मकान बनवा लिया। मकान बनाने का कुल खर्च 12 लाख रुपए आया।

बीना को लगा कि अब आराम से रहेंगे, बच्चों के साथ जिंदगी शायद थोड़ी पटरी पर रहेगी। मगर नगर निगम, फरीदाबाद ने एक के बाद एक खोरी गाँव के घर तोड़ दिए। जेसीबी और पोक्लैन मशीन खोरी गाँव में लोगो के घर तोड़ते गये । 14 जुलाई 2021 को, बीना का घर भी तोड़ दिया गया। घर टूटने के साथ उसके सपने खत्म हो गये। उसके रहने का घर, उसकी जगह सब कुछ खत्म हो गया। बीना फिर से सड़क पर आ गई। अब बीना को जिंदगी फिर नए सिरे से शुरू करनी होगी।

- सरोज पासवान

कहाँ जाए? : विनोद सिंह

विनोद सिंह जी खोरी गाँव में घर टूटने से पहले वहाँ साईं मंदिर वाली गली में रहते थे। उनका चार-पाँच लोगों का परिवार था। जिसमे बेटे की शादी घर टूटने से पहले हुई थी । बहू घर में आई तो पाँच लोग हो गए। किराये का मकान दो महीने में दो बार बदलना पड़ा क्योंकि दो कमरों की ज़रूरत तो पड़ती हैं। विनोद सिंह जी की पत्नी अस्वस्थ है और उसे दवाई मुश्किल से मिल पा रही है क्योंकि लॉक डाउन और के कोरोना वायरस के चलते बेटे का तो काम छूट गया था।

विनोद सिंह जी गार्ड का काम करते थे परन्तु काम अभी नहीं है, ऐसा कह कर मालिक ने उनकी तनख्वाह भी आधी कर दी। अब इन परेशानियों में एक के बाद एक उनका मकान बदलना बहुत ही मुश्किल का सबब बन गया है। सरकार ने उन्हें किसी भी तरह की कोई सहायता नहीं दी। यहाँ तक कि आर्थिक सहायता के नाम पर जो देना था वो भी नहीं मिला। फिर वह एक रात को अपने खोरी गाँव के पुराने घर के पास गए जो टूटा चुका हैं, मगर वहाँ घर की ईंटे तो पड़ी है। उनको संभालना हैं, ईंटे साफ करनी है, फिर वह एक-दो रूपये में बिक जाए, उसकी राह ताकना हैं। घर बनाते वक्त उन्होंने यह ईंटे पाँच-पाँच, सात-सात रुपये में खरीदी थीं। बारिश, मच्छर और बिना लाईट के वहाँ पर रात में रूकना और इतना सब झेलना। यह विनोद के जीवन की कहानी है। यह कहानी एक विनोद की नहीं है। ऐसे बहुत सारे विनोद हैं जो पूछते हैं कि वो जाएँ तो कहाँ जाएँ? न गाँव में कोई घर, न ही उनके पास पैसे बचे हैं ऐसे में करें तो क्या करें?

विनोद के ये प्रश्न किससे है? ये बात विनोद नहीं जानते मगर प्रश्न तो प्रश्न है और हम सभी के सामने खड़े हैं कि शायद कहीं इन्हें सुन लिया जाए।

- बीना ज्ञान

कैसे हो विश्वास? : गौरी विश्वास

गौरी विश्वास गली नं.-10, बगाली कॉलोनी, खोरी गाँव में रहती थी। पैसे जोड़ करके किसी तरह 5 लाख में उन्होंने यहाँ ज़मीन खरीदी। दस साल पहले वह घरेलु कामगार का काम करती थीं। खाना बनाना, बर्तन धोना छोटे-मोटे ऐसे कामो से उन्होंने पैसा जोड़ करके अपना घर बनवाया। जब उनका घर बन रहा था तो पुलिस यह कहकर घर नहीं बनने देती थी कि पहले हमें रुपये दो, नहीं तो मकान नहीं बनने देंगे। अब गौरी क्या करें? वह भू-माफिया के हाथ फँस गई थी। उसे पुलिस इधर-उधर भगा रही थी। इस स्थिति में उसका कौन साथ देता? अत: परेशान होकर उसने पुलिस वालों को 20 हजार जोड़ करके दिए। तब जाकर उसका घर बना और वह वहाँ अपने पति व दो बेटियों के साथ रहने लगी।

गौरी के पास काम तो नहीं था मगर एक सुकून था कि कम से कम अपने घर में रहते हैं। पिछले साल लॉकडाउन में पति -पत्नी दोनों का काम छूट गया। फिर कुछ समय बाद ही उनका घर भी तोड़ दिया गया। अब उनके पास किराये के मकान में जाने के सिवा कोई रास्ता नहीं बचा। जिंदगी भर की जोड़ी हुई कमाई से एक जमीन खरीदी,उस पर मकान बनाया ताकि कैसे भी कर अपनी रोटी कमा करके सुकून से रह सके। परन्तु वह घर भी तोड़ दिया गया और अब तो भिखारी की स्थिति हो गई। 20 साल और17 साल की दो बेटियाँ हैं जो बेघर होने के कारण अलग एक चिंता का विषय हैं। गौरी को समझ नहीं आ रहा है कि क्या करें और 6 हजार रूपए किराये के मकान में कब तक रहें।

गौरी अब अपने आप से पूछती हैं कि क्या जिंदगी पहले जैसी होगी? क्या हम पहले जैसे रह पाएँगे? क्या फिर से बेहतर जीवन की कोई उम्मीद की जा सकती है?

मगर ये उम्मीद हो भी तो कौन से विश्वास पर हो ?

- बीना ज्ञान

कहानी : राजेश

33 साल के राजेश, खोरी गाँव के निवासी थे और साई मंदिर के पास, गली न० 182 में रहते थे। राजेश अपनी पत्नी और एक बच्चे के साथ रहते थे। लॉक डाउन में उनका एक्सीडेंट हुआ और पैर टूट गया। उनका सफदरगंज अस्पताल में इलाज़ चल रहा था। इलाज के दौरान डॉक्टर ने बताया कि उनका ऑपरेशन करना पड़ेगा क्योंकि घुटने के नीचे का पाँव टूट गया हैं। जैसे-तैसे इलाज करा लिया। इलाज के बाद वह मज़दूरी नहीं कर पा रहें थे क्योंकि उनके पैरों में ताकत नहीं रही। छोटा बच्चा होने के कारण उनकी पत्नी भी काम पर नहीं जा पा रही थी। जिंदगी ऐसे मोड़ पर आ गई है कि न मर ही पा रहें और न जी ही पा रहें।

वर्तमान में वह गोविंदपुरी में एक छोटे से कमरे का मकान किराये पर लेकर रहते हैं। आसपास के लोग खाने के लिए दे देते हैं जिससे उनका जीवन किसी तरह चल रहा है। राजेश अत्यधिक परेशान है कि इस भयानक हालात में वह अपनी पत्नी और अपने बच्चे, की देखभाल किस तरह और कैसे करें। जब खोरी गाँव में घर टूटे थे तब से अब तक दिन प्रतिदिन उनका खाना, पीना, रहना सब बहुत ही मुश्किल होता रहा है। इन्ही सब परेशानियों से राजेश खोरी गाँव की कहानी बन गया।

- बीना ज्ञान

एक आदेश : मोहम्मद हामिद अंसारी

70 साल के हामिद अंसारी, अपने दो बेटे और बेटियों, के साथ खोरी गाँव में रहते थे। उनका काम मजदूरी का था मगर देखते ही देखते सब बर्बाद हो गया। रोज कमाना तो रहा नहीं, इस उम्र में मज़दूरी करना भी बड़ी बात हुई। वह किराए का मकान ले नही सकते क्योंकि काम नहीं होने के कारण खाना भी मुश्किल से हो पता है तो किराये का मकान कहाँ से ले पाते। ऐसी पारिस्थिति में बस कहीं पर, झुग्गी डाल करके तो कहीं तिरपाल लगा करके, ऐसे ही कहीं सड़क के किनारे रहना हुआ। यहाँ तक कि एक टाईम खाना और एक टाइम भूखे सो जाना हुआ।

हामिद अंसारी ने 15 साल में एक-एक पैसा जोड़कर थोड़ी-सी ईंटो से घर खड़ा किया था। इस घर के लिए उन्होंने अपने पिता की ज़मीन का छोटा हिस्सा बेच करके, खोरी में ज़मीन खरीदी थी और मज़दूरी करके कमाए हुए पैसों सो घर बनाया। वह रोजाना काम पर जाते, घर, पर आकर रोटी बनाते, खाते और सो जाते। ये उनकी रोज़ की दिनचर्या थी जो अब घर के साथ खत्म हो गयी है। अब न काम है, न घर है और न मकान लेने के लिए किराया, न उनके बच्चे पढ़ पाएँ और अब मज़दूरी करके पेट भरना तो बहुत बड़ी बात हो गई। उनके पास काम भी नहीं, साथ में परिवार और बीमार हो गया। स्थिति इतनी दयनीय है कि पास में इलाज के लिए कुछ पैसे भी नहीं और परिवार को पालने की ज़िम्मेदारी भी है।

उनकी इस दयनीय स्थति को न तो कोई सुनने वाला है, न कोई देखने वाला और न ही उनका कोई सहारा ही है। इस कष्ट भरी जिंदगी को कैसे जियें ? क्या सरकार उनकी इन बातों को सुन और समझ पाएगी? सर्वोच्च न्यायालय के एक आदेश ने बंगाली कॉलोनी में रहने वाले हामिद अंसारी की जिंदगी पूरी बिखेर कर रख दी।
इस बात को सर्वोच्च न्यायालय कभी देखेगा क्या?

- **बीना ज्ञान**

कब्जेदार : गीता देवी

गीता देवी अपने पति चंद्र वीर सिंह, चार बेटियों और एक बेटे के साथ खोरी गाँव में रहती थी। 2019 के लॉक डाउन में उनके बेटे का एक्सीडेंट हो गया, जिसका साल भर से इलाज चल रहा है। डॉक्टर कहता है कि लड़के का ऑपरेशन होगा परन्तु वो कब तारीख देंगे? इसका कोई पता नहीं। उनकी सभी बेटियाँ अविवाहित हैं और उनकी पूरी जिम्मेदारी गीता पर है क्योंकि चंद्रवीर सिंह की भी उम्र हो गई जिस वजह से उनसे अब काम नहीं होता।

मकान टूटने के बाद उन्हें अपनी चार बेटियों की चिंता सताये जा रही है कि अब खुले आसमान के नीचे बेटियों को लेकर कैसे जीयें। कुछ समय तोड़े हुए मकान में झुग्गी डालकर रहे जिसे फिर से तोड़ दिया गया। तिरपाल डाली परन्तु उसे भी उखाड़ दिया गया। अत: तेजपुर में छोटा-सा कमरा लेकर के रहने की बात हुई। अब जो घर मिल रहा है वो पूरे परिवार के अनुसार नहीं मिल पा रहा और अगर मिलता है तो किराया बहुत ज्यादा होता है। गीता अपना दर्द बयान नहीं कर पा रही कि उनका परिवार कैसे ये दिन काट रहा है? बेटी कहती है कि “माँ घर तो बर्बाद हुआ परन्तु भविष्य भी कहाँ बचा। गीता के सामने उसका सब कुछ बर्बाद हो गया। वो कहती हैं कि “हम अपना दर्द किसको कहे क्योंकि यहाँ जितने भी हैं सबकी अलग, कहानी हैं, एक अलग दर्द हैं”। हम एक दूसरे को ही अपना दर्द कहते है क्योंकि सरकार ने तो हमको सिर्फ बुल्डोजर और लाठी की मार दी है। पुलिस सिर्फ मजाक उड़ाते हुए खड़ी हैं। सरकार ने खोरी के सभी लोगो को कब्जेदार बताया हैं।

अब गीता किसको कहें कि उसने कितनी मेहनत से पैसे इकट्ठे करके ज़मीन खरीदी थी और कैसे अपना घर बनाया था।

- बीना ज्ञान

राधा की व्यथा

राधा ने अपनी व्यथा व्यक्त करते हुए रेखा को अपनी आपबीती बताई जिसे रेखा ने राधा करे शब्दों में ही लिखते हुए उनका दर्द बयाँ करने की कोशिश की है।

मेरा नाम राधा देवी है। 37 साल की हूं। पति अनिल 40 साल के है। मैने कोठी मे काम करके तथा अपने जेवर बेच कर जैसे-तैसे खोरी गाँव में जमीन ली थी। फिर घर बनाया था। मेरे पास तो गाँव मे भी घर नहीं है। मेरी तीन बेटियाँ है। किराये पर 5000 रूपये से नीचे तो कही भी कमरा नही मिलता है। मैं हमेशा बीमार रहती हूँ। इस स्थिति में मैं कहाँ जाऊ? हमारा परिवार आपका परिवार नहीं है क्या? मेरी बेटियाँ आपकी बेटियाँ नहीं है क्या?

मेरे पति भी मजदूरी करते हैं। आपसे बस यही प्रार्थना करती हूँ आप हमे यही रहने दे। हम यहाँ पर जैसे-तैसे पन्नी टांग कर रह रहे है। हमारा घर था, वो भी छीन लिया आपने। अब मैं खाऊंगी क्या और क्या किराया भरूंगी? मेरी बड़ी-बड़ी लड़किया है। मेरी हाथ जोड़ के प्रार्थना है कि आप हमे यहाँ रहने दे।

राधा अपनी जैसी अनेक बहनों का दर्द बयाँ करते हुए उनका प्रतिनिधित्व करती है।

- **रेखा चौरसिया**

कुछ पीड़ाएं : गुड्डी देवी, बेबी देवी, आभा देवी

गुड्डी देवी, बेबी देवी और आभादेवी तीनो अपने परिवार समेत खोरी गाँव में रहती थी इन तीनो की आपबीती काफी मिलती जुलती है। इन तीनो की पीड़ा को अभिषेक ने उनकी ज़ुबानी लिखने की कोशिश की है।

मेरा नाम गुड्डी देवी है। मैं 38 साल की हूं और दुर्दिन देख रही हूँ। सरकार ने बड़ी तेजी से हमारे घर को तोड दिया, यहाँ तक कि हमको हमारा सामान निकालने का भी मौका नही दिया। घर में उस वक्त कोई मौजूद नही था जो हमारा सामान निकाल पाता। घर तोड़ने के बाद हमारे पास खाना बनाने के लिए कोई बर्तन भी नही था। बारिश की वजह से हमारे सारे कपड़े गीले हो गए थे। हमें गीले कपड़े पहन कर ही रहना पड़ा था जिसकी वजह से हमारी तबीयत भी ख़राब हो गई। हमारे परिवार में 4 सदस्य है और घर में सिर्फ़ एक काम करने वाला है। एक लड़का है जो पढ़ भी नही पा रहा है। घर टूटने की वजह से उसकी पढ़ाई पर बहुत असर पड़ा।

मै बेबी देवी, 36 साल की हूँ। हमारी गैर मौजूदगी में मेरा घर तोड दिया गया। मेरी बेटी की तबीयत बहुत ख़राब थी जिसे लेकर मैं अस्पताल में थी। उसी बीच में मेरा घर तोड दिया गया। घर मे हमारा कुछ कीमती सामान भी था,वो सब खो गया। कोरोना की वजह से कारोबार भी नही चल रहा है और बीमारी की वजह से हमारे पास एक पैसा भी नही था। जिस कारण टूटे घर के मलबे में से जो लोहा निकला उसे ही बेच कर कुछ दिन अपना गुजारा किया। परिवार में कुल 5 लोग हैं और उन मे से एक ही व्यक्ति कमाने वाला है और वो भी करोना की वजह से काम नहीं कर पाए।

मेरा नाम आभा देवी है और उम्र- 42 साल है। पिछले 12 साल से खोरी गाँव में रह रही हूँ। सरकार ने छलावे में रख कर हमारा घर तोड़ दिया। हमको नगर निगम के अधिकारी ने यह बोला कि "तुम्हारा घर दिल्ली की सीमा के अन्दर है यह नही टूटेगा"। आभा देवी का यह कहना है कि सरकार ने हमको सामान निकालने तक का मौका नही दिया। इनका सामान मलबे के नीचे दब गया। कोरोना की वजह से 2 साल से नौकरी नही थी। अब घर भी गया। परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गयी है।

- अभिषेक

गरीब बनाए गए लोग

वसीला खातून, उर्वशी और दिनेश महतो की कहानियाँ ये बताती है की खोरी गाँव में घर तोड़े जाने के बाद परिवार चलाना कितना मुश्किल हुआ? लोगों की आर्थिक स्थिति बहुत खराब हुई है। 45 साल वसीला खातून खोरी गाँव में 15 साल से रह रही थी। वह पहले कपड़ो पर तुरपाई का काम करती थी परंतु कोरोना की वजह से 2 सालो से काम नही कर रहीं है। उनके पति सिलाई का काम करते है। वो भी कभी कभी ही मिल पाता है। उनके बड़े बेटे मो. निजाम हाथ की कढ़ाई करते है। उनको भी कोरोना की तालाबंदी के कारण आधी तनख्वाह ही मिल पाती है। दूसरे बेटे भी सिलाई का काम करते है परंतु कई महीने से कोरोना काल के कारण काम नही मिल पा रहा है। वसीला जी के छोटे बेटे अभी पढ़ाई करते है। उनकी दो बहुएं है जो कि गृहिणी है और दो पोते है जो की अभी छोटे है। बड़ा परिवार होने की वजह से उन्हें जल्दी कोई अपना रूम किराए पर नही देता। किसी तरह एक घर मिला तो उसका यह 6000 रुपये किराया दे रही है। लोगो से उधार लेकर किसी तरह घर का खर्चा महीनों चलाया।

दूसरी कहानी है, 35 वर्षीय उर्वशी की, जो 15 वर्षों से खोरी गाँव में रह रही थी। इनके परिवार में कुल 4 लोग हैं जिसमें 2 बच्चे हैं। बड़ा बेटा कक्षा 8 में है तथा छोटा बेटा अभी 2 साल का है। उर्वशी जी के पति 42 वर्षीय संदीप सभरवाल एक प्राइवेट जॉब करते हैं। जिसमें उन्हें ₹ 7000 से ₹ 8000 ही मिल पाते हैं। जिसमें कि घर का खर्चा ही मुश्किल से चल पाता है। उर्वशी एक गृहिणी हैं जो बहार काम करने नहीं जाती।

एक वर्ष पहले इन्होंने कुछ पैसे उधार लेकर घर को नए तरीके से बनवाया। परंतु घर टूटने के बाद से इन्हें किराया देने में बहुत परेशानी हो रही हैं। जिसकी वजह से इनके घर की आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गयी है। अभी उर्वशी जी कुल 5000 रुपये किराया दे रही हैं। अब इन्हें समझ नहीं आ रहा है कि किराया कैसे दें और घर का खर्चा कैसे चलाएं? इनके घर में और कोई कमाने वाला भी नहीं है। छोटा बच्चा है जो अक्सर बीमार रहता है।

तीसरी कहानी दिनेश महतो जी की है। 58 साल के दिनेश महतो खोरी गाँव में लगभग 10 सालों से रह रहे थे। इनके परिवार में कुल 7 लोग हैं। दिनेश जी एक प्राइवेट कंपनी में चपरासी का काम करते थे परंतु 2020 में कोरोना के कारण इनको नौकरी से निकाल दिया गया। जिसके बाद से यह बेरोजगार है। दिनेश जी को दमा की शिकायत है जिसकी वजह से उन्हें कहीं भी काम नहीं मिल पाता। अभी दिनेश जी की पत्नी कोठियों में घरेलू काम करके घर का खर्चा चला रहीं हैं। बच्चे अभी पढ़ाई करते हैं। घर टूटने के बाद से घर का खर्चा और मकान का किराया दोनों को पूरा करने में बहुत परेशानी हो रही है। अब यह समझ नहीं पा रहे हैं कि क्या करें कैसे अपने घर का खर्चा चलाएं?

- अमन

आमोद: जीवन व्यवस्था का संतुलन बिगड़ा

खोरी गाँव निवासियों की जिंदगी बिल्कुल तलवार की धार पर है। जरा सा भी संतुलन बिगड़ा नही की सब खत्म।

राज आमोद 2009 में खोरी गाँव आए थे। खोरी में उनके साथ उनकी पत्नी और 3 बच्चे भी रहते थे। खोरी गाँव में उनके बड़े और छोटे भाई भी साथ रहते थे। आमोद किसी ऑफिस में काम करते थे।

कोरोना लॉकडॉन के कारण ऑफिस का काम छूट गया था तो परिवार चलाने के लिए स्वगी फूड डिलीवरी एप में नौकरी शुरु की। उसको रात का काम मिला।

12 जुलाई 2022 को नेहरू प्लेस के पास, दिल्ली में रात को किसी गाड़ी ने पीछे से उनके स्कूटर को टक्कर मार दी। घायल आमोद की सड़क पर पड़ा हुए थे। उनकी किसी ने भी मदद नहीं की, फिर किसी फूड डिलीवरी बॉय ने ही उनको सड़क पर पड़ा देखकर सफदरजंग अस्पताल में एडमिट करवाया। 3 दिन तक ट्रामा सेंटर में रहने के बाद उनकी मृत्यु हो गयी।

उनके पीछे उनकी पत्नी, 12 व 6 साल का एक लड़का और 13 साल की लड़की है। सब कुछ ही दिन पहले अभी गांव से लौटे थे। अब अपना घर भी नहीं है कि उसमे रह कर किसी तरह गुजारा कर ले। परिवार का पूरा ताना बाना बिखर गया। पुराना किराया भी अभी सर पर चढ़ा हुआ है। मकान का किराया अब सबसे बड़ी समस्या बना हुआ है।

एक मजदूर के रोज के संघर्षों के साथ और बड़ी लड़ाइयाँ जुड़ती रहती हैं। मगर खोरी गाँव से उजाडे गए लोगों की स्थिति नाजुक तलवार की धार पर चलने जैसी है। कहीं भी कुछ जरा सा हिला और बस सब कुछ खत्म। घर होता तो कम से कम घर में रह लेते। रोटी तो कैसे भी खा लेते। छोटे छोटे से कमरे महंगे महंगे दामों पर मिलते हैं। हर एक के सिर पर यह किराए का मकान भीषण आपदा की तरह रखा है।

कोरोना काल में राज आमोद जैसे कितने ही लोगों की अच्छी खासी नौकरी चली गई। घर था तो बहुत कुछ संभला हुआ था। अब परिवार का मुखिया गया, घर की छत भी नहीं। इसके लिए जिम्मेदार लोग क्या यह परिस्थिति समझ सकते हैं?

- विमल भाई

मकान मालिक बने किराएदार

"खोरी" एक ऐसा गाँव हैं जो कई वर्षो पहले बसना शुरू हुआ था। कुछ भू-माफियाँ (डीलर), जिन्होंने यहाँ की ज़मीनों पर बसावट करनी शुरू की थी। यहाँ वो लोग आकर बसे जो काम की तलाश में गाँव से आते थे। उन्होंने सोचा इधर-उधर कहाँ भटकेंगे। अपना एक आशियाना हो जाएगा तो अच्छा रहेगा। काम न मिले कम-से कम छत होगी, तो एक टाईम भूखे भी रह लेंगे। चाहे कर्जा लिया, गाँव की ज़मीने बेची या वर्षों की जो कमाई इकट्ठी की उससे जैसे-तैसे उन लोगों ने ज़मीन ली। वर्षो लगे, इस ज़मीन पर ईट पत्थर के आशियाने खड़े करने में। जो कमाया वो लगाते गये ताकि अच्छे घर में रह सकें। किसके ख्वाब नहीं होते अच्छे घर में रहने के? इन गरीब, दिहाड़ी मज़दूरों के भी थे। परिवार के लिए एक आश्रय सुरक्षित किया, एक सुंदर भविष्य की कल्पना की । लगभग 10,000 से ज्यादा मकानो का यह सुन्दर गाँव बसा। बेशक सभी अलग-अलग गाँव से थे, सबका अलग-अलग पहनावा था, अलग- अलग भाषाएँ थी, पर सभी एक थे। वे "खोरीवासी" थे। सभी त्यौहारों को धूम-धाम से मनाते थे। सबके सुख-दुख में साथ खडे होते थे। एक-दूसरे का सहारा थे। सब खुश थे। सबकुछ अच्छा चल रहा था। तभी अचानक "7 जून, 2021" को खोरी गाँव को तोड़ने का नोटिस आता है और खोरी को तोड़ दिया जाता है।

हजारों परिवारों की जिंदगी की परवाह न करते हुए उन्हें तितर-बितर कर दिया जाता है। खोरी गाँव को तोड़ते वक्त यह भी नहीं सोचा गया कि इन लोगों के भविष्य का क्या होगा? इन परिवारों में कितने बुजुर्ग, कितने नवजात शिशु, कितनी महिलायें और कितने युवा होंगे जिनका भविष्य ही एक फैसले ने बदल दिया। जिन युवाओं ने ख्वाब देखा था कि "मैं कुछ बनकर दिखाऊँगा, अपने माता-पिता को एक अच्छी जिंदगी दूंगा" आज अपनी पढ़ाई छोड़कर रोजगार की तलाश में लगे हुए है ताकि कैसे भी इस विकट परिस्थिति में अपने परिवार को सहारा दे सकें। क्या इनका भविष्य ये होता ? जो अभी हो गया है।

अब इतनी बड़ी आबादी कहाँ जाए? कैसे रहें ? क्या सरकार ने यह सोचा ? क्या इन लोगों का कोई भविष्य नहीं? ये लोग क्या थे और अब क्या हो गये? इन लोगो ने किसी तरह यहाँ के आस-पास के इलाकों में कमरे किराये पर लिए। जहाँ उन्हें विकट परिस्थितियों में रहना पड़ रहा हैं। हमारे कुछ साथियों ने खोरी गाँव के आसपास के इलाकों में, किराए पर रहने वाले खोरी वासियों से बातचीत की। उनकी जगहों को, उनकी वहाँ की परिस्थितियों को देखा। उन्हीं की रिपोर्टों को संक्षिप्त करके हम यहां रखा है। यह हाल खोरी गाँव के सैकडों परिवारों का है इसलिए यहाँ लोगो के नाम नही दिए गए। परन्तु उनकी आपबीती को शब्द देने की कोशिश की है ताकि दुनिया यह जान सके कि अपने घर के मालिक अब किस हालात में जाकर रह रहे हैं। स्थितियां इससे भी ज्यादा बदतर हुई हैं।

- शाहीन परवीन

खोरी संघर्ष के साथी सरोज पासवान, धर्मेन्द्र कुमार और अभिषेक ने भी खोरी गाँव तोड़े जाने के बाद दिल्ली के अलग अलग क्षेत्रो में स्थानांतरित हुए खोरी वासियों को न केवल दूंढा बल्कि उनसे बात कर उनकी कहानी को उनकी ज़ुबानी लोगो तक पहुचाने की कोशिश की। नीचे दिल्ली के अलग अलग क्षेत्रो में अनेक परेशानियों का सामना कर रहे खोरी वासियों के दर्द को लोगों तक पहुँचाने की कोशिश की है।

गोविन्दपुरी (कालका जी),दिल्ली

गोविंदपुरी की संकीर्ण गलियों की बहुमंजिला इमारतों के तो क्या ही कहने। बरसात में यहाँ इतनी गंदगी होती है कि अच्छा खासा इंसान बीमार पड़ जाए। समुचित सुविधा न बिजली की है न ही पानी की। यहाँ रहनेवाले "खोरीवासी" जिन्होंने खोरी टूटने के बाद मज़बूरी में यहाँ कमरा लिया है। वे बताते हैं कि उन्हें बड़ी मुश्किल से चौथी मंजिल पर कमरा मिला। जिसका किराया उनसे 6,000₹ लिया जा रहा है और पानी का पैसा अलग से भरना पङता है। बिजली का बिल भी अलग से देना पङता है। ऊपर से बच्चो की पढाई का भी खर्चा है। पहले तो अपनी जगह थी। कपड़ो पर कढ़ाई का काम होता था। सब-कुछ चल जाता था, किंतु अब जबसे घर टूटा है तब से सदमें ने मानसिक रूप से तो कमजोर कर ही दिया है, शारीरिक स्थिति भी कुछ ठीक नहीं। आए दिन डिस्पेन्सरी के चक्कर लगाते रहते हैं। अब आप सोच ही सकते हैं कि बच्चों कि शिक्षा का क्या हुआ होगा? बच्चे जो पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित करते थे। डाक्टर और आईपीएस बनने के सपने देखते थे, अब स्थिति को देखकर चिंतित रहते है।

A - ब्लॉक, रेलवे कॉलोनी, पुल प्रहलादपुर, दिल्ली

यहाँ 6 सदस्यों के एक परिवार ने कमरा लिया। इन्हें यहाँ एक कमरा ₹ 4,500 का मिला। वो भी 15 दिनों तक कड़ी मशक्कत से ढूंढने के बाद। इसी एक कमरे में इन्होंने एक साइड बेडरूम, एक साइड किचन बना रखा था और नहाने के लिए भी कमरा ही प्रयोग में लाते हैं।बाकि बर्तन, कपड़े सब गली में ही धोना पड़ता है। वहीं पानी भी भरना पड़ता है।

घर में तीन लड़कियाँ और दो लङके हैं। जो कि पहले पढ़ाई करते थे। किंतु, अभी पढ़ाई बंद है। पति के साथ दुर्घटना हुई थी तब से सारा शरीर कमजोर है। पहले वह सिलाई का काम करते थे। अब वो भी नही हो पा रहा है। पहले अपना घर था तो घर पर फैक्ट्री से कपड़ों को ठीक करने का काम आता था। उससे घर चल जाता था। घर टूटने के बाद वो भी सब ख़त्म हो गया। अब तो खर्चे इतने बढ़ गये हैं कि गुजारा करना भी मुश्किल होगया है।
नई जगह है तो आस-पास के लोग भी नये हैं ज्यादा मदद नही कर सकते। ये लोग कब तक ऐसी स्थिति में रह पाएंगे, पता नहीं?

पंचमुखी - मौहल्ला 'लाल कुआँ, दिल्ली

यह कुछ खास मौहल्ला नही है। यहाँ पर ज्यादातर आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के ही लोग रहते हैं। परन्तु कमरे यहाँ पर भी महंगे हैं। यहाँ एक कमरा है जो कि 4,000₹ का है। जिसमे एक तरफ सिंगल बेड और दूसरी तरफ चूल्हा रखा हुआ है। बाहर छत है वहाँ एक तिरपाल टँगा है। जहाँ घर का बाकी का सामान पड़ा हैं। सामान अंदर नहीं रख सकते क्योंकि कमरा छोटा है। उसमे क्या-क्या रखें?

ये कमरा ढूँढ़ने में भी इन्हें बहुत परेशानी हुई, क्योंकि इनका परिवार बड़ा है और ज्यादा बड़े परिवार को मकान मालिक जल्दी कमरा किराए पर नहीं देते। एक महीने तक कमरा ढूँढा तब जाकर ये कमरा मिला। इनके बच्चे पहले पढ़ते थे। अब इनकी पढ़ाई छुड़वा दी गई है। घर की आर्थिक स्थिति ही इतनी खराब है, किराया देना ही मुश्किल हो जाता है। अभी खोरी गाँव में जो मकान टूटा है, उसी के हिस्सों को बेचकर गुजारा कर रहे हैं। एक ही जन कमाने वाला है जो कि अभी बेरोजगार बैठा है। काम अभी मिल नहीं रहा। अगर मिलता भी है तो नाईट शिफ्ट में, आने-जाने की सुविधा ठीक नही है। जिसके कारण काम पर नहीं जा पा रहे। जैसे-तैसे गुजारा चल रहा है।

मित्तल कॉलॉनी, पुल प्रहलादपुर, दिल्ली

इस कॉलोनी में अलग-अलग राज्यों के लोग रहते हैं । यहाँ खोरी गाँव का भी एक परिवार है। जिन्होंने यहाँ खोरी टूटने के बाद कमरा किराये पर लिया है। इस परिवार में कुल13 सदस्य हैं। जिनमें से दो कमाने वाले हैं। वे लेबर का काम करते हैं। इतना बड़ा परिवार होने के कारण कमरा ढूँढने मे बहुत कठिनाई हुई। कमरे मिले, जिसका किराया 8000 है। दो छोटे- छोटे कमरे हैं जिस वजह से सभी लोगों के सोने के लिए पर्याप्त जगह नहीं मिल पाती है। इस कारण कुछ लोग किचन में सोते है। कुछ को तो रिश्तेदारों के यहाँ जाकर सोना पड़ता है।

इतना किराया देने के बाद भी इन्हें पानी व बिजली का पैसा अलग से भरना पड़ता है। इनके धर्म की वजह से भी यहाँ के लोग इन्हें शक की निगाह से देखते हैं क्योंकि यहाँ एक विशेष आबादी की बहुलता है। इतनी दिक्कतों की वजह से बच्चों की पढ़ाई-लिखाई बंद करवा रखी हैं। घर में दो औरते है, जो अक्सर बीमार रहती हैं। पहले जहाँ रहते थे, वहाँ काम मिल जाता था। अब तो काम मिलना भी मुश्किल हो गया है।

संगम विहार, गली नं.-17, दिल्ली

ये लोग संगम विहार में कमरा ढूँढ़ने गये। इन्हें कमरा ढूँढ़ने मे 10 से 12 दिन लग गए। यहाँ बरसात में पानी घुटनों तक भर जाता हैं। यह जगह इतनी अंदर हैं कि मेन रोड पर आने में घंटों लग जाते हैं। आने-जाने के लिए ऑटो करना पड़ता है। जिसका किराया बहुत अधिक हैं। यहाँ 8000 रुपये में कमरा किराये पर मिला। यहाँ से बच्चों का स्कूल बहुत दूर पड़ता है जिसकी वजह से आने-जाने में बहुत कठिनाई होती है। नई जगह है जिससे लोगों से ठीक से पहचान भी नही है। काम पर भी जाते हैं तो बच्चो को अकेले छोड़ने में डर लगता है।

यहाँ पानी और बिजली की भी समस्या हैं। एक तो परिवार में 6 लोग है जिस कारण कमरा ढूँढने से भी काफी कठिनाई हुई। दूसरे यदि इनके घर कोई रिश्तेदार मिलने आ जाए तो इसमें भी मकान मालिक चिल्लाता है। कमरा खाली करवाने की भी धमकी देता है। इतनी दूर और ऐसी जगह पर कमरा मिला। जिस कारण कार्यस्थल पर भी पहुँचने में देरी हो जाती है।इतनी दिक्कत है कि काम छूटने के कगार पर है। भविष्य में पता नहीं ये कब तक किराया दे पाएँगे, कहाँ रहेंगे?

गड़ी गाँव, सेड़ा मोहल्ला, लाजपत नगर, दिल्ली

यहाँ का हाल भी बेहद खराब हैं। नालियाँ भरी रहती है। बारिश में रोड पर चलना मुश्किल हो जाता है। यहाँ कमरे भी बहुत छोटे हैं और किराया भी बहुत अधिक है। यहाँ कमरे का किराया 4 से 5 हजार है, ऊपर से 10 ₹ प्रति यूनिट बिजली बिल। पानी भी प्रर्याप्त मात्रा में नहीं मिल पाता। 2-3 दिन पर पानी आता है।

नये लोग है, नया मोहल्ला है, जब बीमार पङते हैं तो कोई देखने वाला भी नहीं। यहाँ जिन्होंने कमरा लिया है, उनका कार्यस्थल भी यहाँ से अधिक दूरी पर है। उन्हें ग्रेटर नोएडा, सैक्टर-62 में काम करने जाता होता है जिसमें 2-3 घंटे का समय लग जाता है। किराया भी अधिक लगता है। इतनी दिक्कतों के बावजूद लोग मज़बूरी में यहाँ रह रहे हैं।

तिगडी, दिल्ली

तिगड़ी में खोरी गाँव के परिवार की हालत इतनी ज्यादा खराब है जब भी बारिश होती हैं, नाले सब भर जाते है और पानी कमर तक रोड पर भर जाता है। इधर -उधर कूङा-कचरा भरा रहता है। इस स्थिति में कोई बीमार पड़ जाए तो वो सही से समय पर अस्पताल भी नहीं पहुंच पाएगा। यहाँ कमरे भी महंगे है। कोई सुविधा भी नहीं। काम पर जाने में बहुत समय लग जाता है।
 यहाँ पर खोरी के लोग बहुत बुरी अवस्था में रह रहे हैं।

03 मी लार्ड

मी लार्ड
हजारों घर तोड़ दिए
खोरी गाँव में!

अब कोई सपना जन्म नहीं लेगा।
आँखें बाहर फेंक दी है।
तिरपालों में लिपटी,
बासी रोटी,
टूटी पानी की बोतल लिए,
कुछ आँखें बची है।

मी लार्ड!
जल्दी ही हटा दी जायेंगी,
होटल साफ दिखेगा।

मी लार्ड,
आपको नींद अच्छी आई ?
देखिए अब
ग्रीन ग्रीन का सपना
साकार होगा।

खोरी गाँव बुलडोजर में
दबे कुचले टूटे बिखरे, किसी सपने की हिम्मत
दोबारा उगने की न होगी!
मगर मी लार्ड
समतल हुई ईटों के नीचे
एक पर्ची मिली है
लिखा है

हमारे कोई सपने नहीं थे
हम तो बस किसी के
सपनो की तामीर करते थे।
खोरी गांव में हमारी
बस एक छत थी।

मी लार्ड
पर्ची जला दूँ?

- **विमल भाई**

ईंट

मैं ईंट
कभी घर थी।
लाल-लाल भट्टी में तपी मिट्टी
सांसो में ठहरी थी
बिकती रही मजदूरों के हाथों से
फिर मजदूर के ही
घर की दीवार बनी
किसी ने टीन डाली
तो किसी ने छत बनाई
और बस चारदीवारी और छत के नीचे
एक दुनिया रच बस गई

बच्चे हँसते थे, खेलते थे
मेरे साए में
कोने में रोटी बनती थी
सुगंध से मैं काली भी पड़ी
तीज त्यौहार, अल्लाह-क्रॉस
सब मेरे अपने थे।
पसीने में नहाये बदन
अपनी सुकून भरी सांसो से
मुझे महका देते थे।

कभी बिजली कभी पानी
रोज के झगड़े
मगर फिर
प्यार में रचे बसे गुंथे रिश्ते।

ऊबड़खाबड़
ऊँचे नीचे रास्ते
तो घर भी ऐसे ही
ऊँचे नीचे।

हम ईटों को
कहीं ऊँची जगह मिली थी
तो कहीं बहुत नीची जगह
मगर फिर भी हम घर थी।

कुछ कलम कागजों ने
हेराफेरी की
और हमें बिखेर दिया।

पर ईंट तो ईंट हैं!
फिर इकट्ठी होंगी
फिर कहीं घर बनेगी
मगर ये खोरी खोरी यादें
हम ईटों से धुल नहीं पायेगी।

- विमल भाई

04 दिवंगत विमल भाई को सतरंगी सलाम

विमल भाई 22 वर्ष की आयु से सामाजिक और पर्यावरण के काम में लगे थे। उत्तराखंड में गंगा-यमुना घाटी में बड़े बांधों के पर्यावरणीय और सामाजिक मुद्दों पर, राजस्थान में अरावली श्रृंखला में हो रहे भारी गैर कानूनी खनन के खिलाफ और लोगों की हक में भी काम करते थे। "जन आंदोलनों का राष्ट्रीय समन्वय" से जुड़कर देशभर के आंदोलनों के साथ रहे। पिछले एक वर्ष से खोरी गांव के लोगों के साथ काम कर रहे थे।

पर्यावरणीय व सामाजिक मुद्दों पर लेखन, कविता और कहानियां लिखना और कलाकारिता भी उनका शौक था। उनकी 20 पुस्तकें इन्हीं मुद्दों पर प्रकाशित हो चुकी हैं। यह संकलन उनकी लिखी आखिरी पुस्तक है। 15 अगस्त 2022 को नई दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में बहु अंग विफलता (मल्टी ऑर्गन फेलियर) के कारण उनका निधन हो गया।
विमल भाई बेशक इस दुनिया को हमेशा के लिए अलविदा कह गये परन्तु उनका दिया संघर्षशील जज़्बा हम सभी में हमेशा जीवित रहेगा।

विमल भाई को सतरंगी सलाम !

सबके संघर्ष के साथी दिवंगत विमल भाई के नाम साथियों के सन्देश

ख़ोरी गाँव के विमल काका

जिंदगी का एक बड़ा हिस्सा ख़ोरी गांव फरीदाबाद में ख़ोरी विध्वंस के साथ सब समाप्त हो गया। हमें पुनर्वास नहीं मिला और न ही सरकार से कोई उम्मीद। एक वर्ष होने के बाद भी मैं और मेरे जैसे हजारों परिवार आज भी विस्थापन का दर्द झेल रहे हैं ।

पहली बार विमल काका से मुलाकात। काका इसलिए क्योंकि वह सर कहने से मना करते थे। मुलाकात से पहले कई बार फोन पर बात होती थी ख़ोरी में वही मलबे पर बैठकर ख़ोरी वासियों से बातें कर रहे थे और लोगों को खोरी गाँव के चल रहे कोर्ट केस के बारे में समझा रहे थे। ऐसा पहली बार भी था कि कोई व्यक्ति न्यायिक प्रक्रिया को बिना पढ़े-लिखे लोगों को समझा रहा था। लोगों को प्रेरित करना कि वह इस अन्याय के खिलाफ आवाज उठाएं और चिट्ठियां लिखें और एक रहें। हमारे आवास के अधिकार क्या है? हमें गलत तरीके से उजाड़ा गया। वह इन सभी मुद्दों पर समझा रहे थे। यह बहुत आश्चर्यजनक था क्योंकि इससे पहले जो भी लोग थे उन्होंने लोगों को गुमराह करने और पैसे लेने के अलावा कुछ भी नहीं किया। आज तक सही जानकारी किसी ने नहीं दी थी।

(छवि: सरकार को चिट्ठियाँ लिखने के लिए एक जुटता 21-11-2021)

उनकी सादगी उनके दयालबाग वाले घर को देखने के बाद भी मालूम पड़ती है। खाना बनाने से लेकर घर की पेंटिंग करना, बेहतरीन चित्रकारी, सिलाई करना, चरखा कातना, संविधान की प्रस्तावना हो चाहे गांधी जी की प्रार्थना। यह सब एक साथ उनके घर में दिख जाएगा।

विमल काका ने ख़ोरी गाँव विध्वंस के बाद अप्रत्यक्ष और प्रत्यक्ष रूप से हम विस्थापितों का हर कदम पर साथ दिया। वह हम ख़ोरी वासियों की एक मजबूत आवाज थे। बीमार होने के बावजूद भी एक दिन भी खाली नहीं बैठना, हर वक्त खोरी गाँव की बात करना।

पंजाब भूमि संरक्षण कानून को सरल भाषा में फिल्म के द्वारा खोरी वासियों को दिखाना ताकि वह लोग भी समझ सके कि उनकी बस्तियों को किस कानून के तहत उजाड़ा गया है। लोगों की कहानियों को इकट्ठा करना, उसका पॉडकास्ट बनाना, कोर्ट केस से सम्बंधित वकीलों से बात करना और जमीनी जानकारियाँ खोरी अपडेट के मध्याम से पहुँचाना। लोगों को यह जानकारी देने के साथ साथ खोरी वासियों के सभी त्योहारों में उनके साथ खड़े होना, उनके दुखों में खड़े होना विमल काका की दिनचर्या थी। बच्चों की शिक्षा में किताबो से लेकर मार्गदर्शन तक मे सहयोग करना हमेशा रहता था। टीम साथी को वह परिवार की तरह मानते थे ।

विमल काका 15 अगस्त 2022 को हमारे बीच नहीं रहे। उनकी कमी हमेशा रहेगी। जब जब ख़ोरी गाँव के विध्वंस की बात होगी तब तब विमल काका को याद किया जाएगा ।

समाज मे ऐसे व्यक्तियों की बहुत आवश्यकता हैं जो गरीबो की पीड़ा को समझते हैं। आज कोर्ट केस के द्वारा व खोरी गाँव का प्यार जो भी थोड़ा बहुत ख़ोरी वासियों को मिल पाया है वह विमल काका की मेहनत और प्रेरणा का परिणाम है कि हम लोग अभी भी अपने अधिकारों के लिए आवाजें उठा रहे हैं।

विमल काका अमर रहे!

जिंदाबाद!

- अरविंद कुमार, खोरी गांव

जिंदादिल विमल काका

जिंदाबाद साथियों,

विमल काका से हमारी मुलाकात खोरी गाँव में जून 2021 की शाम को हुई। उस समय खोरी गाँव को तोड़ने के लिए सर्वोच्च न्यायालय से नोटिस दिया था कि करीब 10000 घर को तोड़ा जाए। उस समय खोरी गाँव के लोग घबराए हुए थे क्योंकि उनके पास कोई भी दस्तावेज नहीं थे। विमल काका ने उसी शाम को सबसे पहला काम लिस्टिंग का करवाया और कुछ चिट्ठी लिख कर सरकार तक पहुँचाई गयी। उसके एक हफ्ते बाद व्हाट्सएप ग्रुप बनाया गया।

विमल काका बहुत संवेदनशील व्यक्ति थे और जब भी वह किसी को असहाय देखते तो उनके प्रति बहुत बेचैन हो जाते थे। हमने उनके साथ रहकर देखा कि वह अपना सब कुछ दे देंगे और खुद को पूरी तरह से लोगो की सेवा के लिए समर्पित कर देंगे। उनको हमेशा मेरी चिंता रहती थी। दो-तीन दिन तक कॉल ना करूं, ग्रुप पर जवाब ना दूं और अचानक से उनके घर पहुंच जाता तो वह सबसे पहले मुस्कुराते और अपने सीने से लगाकर बोलते थे तुझे देख लिया तो मुझे बहुत खुशी मिली।

किसी को जवाब दे ठहराना विमल काका के सक्रियता के तरीके की विशेषता थी।
उनके अंदर लोगों को अपने साथ बहुत तेजी से जोड़ने और उनको एक कार्यकर्ता के रूप में बदलने की स्वीकृत क्षमता थी। वह सिर्फ एक कार्यकर्ता नहीं थे, वह एक सच्चे गांधीवादी, जो कि हमेशा गांधी की तरह रहते थे और गांधी की तरह काम करते थे।

मैं उनसे जब भी अकेले मिला तो " गुरु जी नमस्ते" बोला करता था (मैंने उन्हें अपना गुरु मान लिया था) एक दिन की बात है मैं उनके साथ बैठा हुआ था वह अपने साथी से बात कर रहे थे कॉल कटते ही बहुत तेज हंसे और मुस्कुराए, फिर मेरे कंधे पर हाथ रखकर बोले तुम मुझे गुरुजी की जगह (मामा जी) क्यों नहीं कहते? मुझे उन्हें समझाना पड़ा कि मैं उन्हें एक गुरु के रूप में देखता हूं, लेकिन वह मुझे हमेशा अपने परिवार से बढ़कर मानते थे। और मुझे अपना (भतीजा) कहते थे। उन्हें छोटे बच्चो से बहुत लगाव था। वह मेरी छोटी बहन के बारे में हमेशा पूछा करते थे और कभी-कभी मुझे वीडियो कॉल के जरिए मेरी छोटी बहन के साथ खेलना और उससे बात कर लिया करते थे।

जब देश ने 15 अगस्त 2022 को अपनी स्वतंत्रता का 75वाँ वर्ष मनाया, तब हमने खोरी गाँव के सबसे मजबूत प्रतिबिंब और बुलंद आवाजों में से एक विमल काका को खो दिया।

जिंदादिल विमल काका के साथी,

- धर्मेंद्र कुमार

हमारे विमल काका

विमल काका से मेरी मुलाकात कुछ इस तरह से हुई, जब मेरा घर टूट गया था। उस वक्त टूटे हुए घर के ईंटो पर बैठकर हम अपनी किस्मत पर रो रहे थे और सोच रहे थे कि हमने ऐसा क्या किया जो हमे आज ये देखना पड़ रहा है। घर को लेकर मेरे पापा के मन में था कि इस घर को बेच कर बेटी कि शादी कर देंगे। हम यही सोचते रहते थे कि घर में तंगी चल रही है, कम से कम घर तो है जिसे बेच देंगे, लेकिन अब वो भी नही है। इन्ही सब उलझन में एक ये भी उलझन थी कि अब आगे क्या होगा? न तो कोई सर्वे हुआ न ही कोई सरकारी अधिकारी आकर हमसे हमारी जानकारी लेकर गए, फिर एक दिन हमारे पड़ोसी (सिराज जी) आये। उनके हाथ में कुछ पेपर थे और उन्होंने कहा कि इस पेपर पर इस एरिया में जो लोग रह रहे है, उनकी जानकारी लिख लीजिए। जब मैंने लोगो से उनकी जानकारी लिख ली और फिर उस पेपर को भेजना था तो सिराज जी ने मुझे (विमल काका) का मोबाइल नंबर दिया। मैने काका के व्हाट्सएप पर वो पेपर भेजें। तब उनसे पहली बार मेरी बात हुई। फिर उसके बाद विमल काका से बातचीत होने लगी और वह मुझे कुछ-कुछ कामों में शामिल करने लगें।

विमल काका के साथ काम करके मुझे उनको जानने और समझने का मौका मिला। वो बहुत ही साधारण सा धोती-कुर्ता पहने रहते थे। वह बहुत सरल स्वभाव व गांधीवादी थे तथा गांधी के मार्गदर्शन पर चलते थे। वह गांधी जी के ही तरह खादी का कपड़ा पहना करते थे और खुद ही अपने कपड़े खुद ही सिलते थे। उनको फालतू का खर्च का करना बिलकुल पसंद नहीं था। वो हमेशा आगे का सोच कर काम करते थे और काम को ले कर वो बहुत ही सख्ती बरतते थे। कैसे बोलना है? क्या बोलना है? किस तरह काम करना है? ये तरीका सबको सिखाते थे। उनको खाना बनाकर खिलाना बहुत अच्छा लगता था और वह लोगो से मजाकिया अंदाज में कहते थे कि खाना जैसा भी बना हो तारीफ ही करना। वैसे उनके हाथों की बनी हर एक चीज में एक अलग ही स्वाद रहता था। हम सबको उनके हाथों का बना खाना अच्छा लगता था। हम लोग जब भी उनके घर जाते थे तो कहते काका आज आप क्या खिला रहे हो। उन्होंने जाते-जाते हमे बहुत कुछ सिखा दिया और अब हम उनके तरीके पर ही चल रहे है। उनकी सिखाई हुई हर चीज काम आ रही है।

मुझे उनकी बहुत याद आती है। उन्होंने मुझे जीने का सही तरीका सिखाया। वो कहा करते थे अपने लिए तो हर कोई जीता है, गैरो के लिए जी कर देखो तब मजा है। वो अपने चुटकुलों से हमे हँसाया करते थे और अपनी कविताओं से रुला भी दिया करते थे। विमल काका आपकी बहुत याद आती है। हमने आपसे बहुत कुछ सीखा है और बहुत कुछ सीखना था। आपकी बाते आपकी यादें हम सब के मन में हमेशा जिंदा रहेगी।
वी मिस यू काका

- अरशद अली (टीम साथी), खोरी गाँव

हम सबके विमल भाई

विमल भाई जिनको खोरी के साथी काका के नाम से भी बुलाते थे और बुलाते रहेंगे खोरी का विध्वंस होने से पहले काफी बार मेरी विमल भाई से ऑनलाइन मीटिंग हुई लेकिन उसमें मैं यही देखता था कि एक जुझारू व्यक्ति जो की उम्र में काफी बड़े थे हमसे कोई भी मीटिंग ऑनलाइन मिस नहीं करते चाहे रोड पर हूं ट्रेन में हो रास्ते पर चल रहे हो फटाफट में से मीटिंग ज्वाइन करना उनका और एक सोच के साथ एक विचार के साथ बिना ग्राउंड को देखें उन तथ्यों को अपने अंदर उतार लेना भाप लेना उनके लिए अपने हृदय में सद्भावना रखना एक अलग सा प्रकाश देता था। मेरी मुलाकात विमल भाई से 14 जुलाई शाम 5:00 बजे पहलादपुर पर हुई साथ में दो पत्रकार भी मौजूद थे पहले कभी देखा नहीं था। सामने से तो इतना पहचानने में भी आसानी नहीं हुई लेकिन चमकता हुआ सितारा 6 फुट का एक व्यक्ति अंगूठी पहने साफी से पगड़ी बनाए हुए एक लंबा झोला लटकाए हुए लंबी-लंबी कदम बढ़ाते हुए मेरी ओर बढ़ रहा था प्रतीत हुआ जैसे कोई विदेशी आ गया हो यहां से कदम से कदम मेरा और विमल भाई का मिलकर चलना प्रारंभ हो गया ।14 जुलाई भारत के इतिहास में हमेशा जब भी विध्वंस का नाम आएगा तब तब याद की जाएगी खोरी गांव का विध्वंस 14 जुलाई नीले बोर्ड से स्टार्ट कर दिया गया था जिस दिन भारी बारिश दिल्ली के तमाम इलाकों में थी उस दिन पापी सरकार ने गरीबों के घर से भरी बरसात में सैकड़ों बच्चे, हजारों महिलाएं, बुजुर्ग तो लगभग 10000 के घर आसपास के घर थे। 14 जुलाई को लगभग 200 घरों को तोड़ दिया गया और लगभग 6:00 बजे हम लोग पहुंच गए। पूरे गांव में मातम पसरा हुआ था । अभी सिर्फ 10000 घरों में सिर्फ दूसरों को तोड़ा गया था एक गम का माहौल पूरे दिल्ली एनसीआर देश-विदेश इसकी आवाज पहुंच चुकी थी लेकिन निकम्मी सरकार उनके कुछ राजनैतिक सस्ती राजनीति करने वाले दलाल ने लोगों की जिंदगियों का तमाशा बना के रख दिया उसके बाद विमल भाई और मैंने खोरी गांव की तमाम साथियों से बात की और सुप्रीम कोट पहुंच गए जहां विमल भाई ने संजय पारिख जी से लोगों की तरफ से विनम्रता से लोगों की हक की लड़ाई को लड़ने का आग्रह किया और फिर खोरी की लड़ाई सुप्रीम कोर्ट में लड़ी जाने लगी । जमीनी स्तर पर मैंने खुद उनसे सीखा कि लोगों को किस तरह जोड़ा जाए।

उन्होंने लोगों को जोड़ा और एक आंदोलन खड़ा कर दिया जिसका नाम टीम साथी खोरी गांव रखा गया। विमल भाई ने खोरी में काफी संघर्ष चाहे धूप हो पानी हो या रोती हुई ठंड तत्पर खड़े रहे 10 अगस्त विमल भाई की तबीयत खराब हुई और हम लोग उनको अस्पताल ले गए और 15 अगस्त जिस दिन हमारा देश भारत आजाद हुआ था उसी दिन विमल भाई ने सभी को अलविदा कह दिया उनका संघर्ष उनकी यादें और जो मुहिम विमल भाई ने खोरी गांव में चलाई थी उसी अनुसार उनके दिखाए हुए रास्तों पर सभी कोरी के साथी अपनी लड़ाई मजबूती से लड़ रहे हैं लेकिन अफसोस जिस शख्सियत इतना बड़ा आंदोलन खड़ा किया अब वह भी नहीं है विमल भाई को सतरंगी सलाम।

- नीलेश कुमार (सामाजिक कार्यकर्ता, बस्ती सुरक्षा मंच)

जब मैं दुनिया छोड़ जाऊंगा,
तब लिबास छोड़ जाऊंगा और
जिस्म छोड़ जाऊंगा मैं
आवास छोड़ जाऊंगा मेरे
उड़ जाएंगे प्राण पंखेरू
एहसास छोड़ जाऊंगा

अपने सांसों के तिलिस्म का
तार तोड़ जाऊंगा
सफर पल दो पल मेरे यारा
मैं तेरा संसार छोड़ जाऊंगा
कुछ बाकी निशान
मैं कुछ पहचान छोड़ जाऊंगा
मोह के मेले में रिश्ते,
नाते, दोस्ती (विमल) नाम छोड़ जाऊंगा
मैंने कुछ तकल्लुफ दिए
हो गर जज्बात मेरे
आपकी माफी का
इंतजार छोड़ जाऊंगा

मैं इतना भी काबिल नहीं
मेरी बेटी मुस्कान हर दिल अजीज
हो आपका सवालों में जवाबों
का तालुका तोड़ जाऊंगा
मैं शरीर अपना
छोड़ जाऊंगा ।
परछाई छोड़ जाऊंगा
अपना स्नेह छोड़ जाऊंगा

- मुस्कान कुमारी (खोरी गाँव)

विमल काका को सतरंगी सलाम

अगस्त का महीना था। खोरी गाँव लगभग पूरा टूट चुका था। फिर भी हम लोगो के दिल मे यह उमीद थी कि कुछ ऐसा हो कि हमारे घर न टूटे लेकिन खुदा को कुछ ओर ही मंजूर था। आखिर वह दिन आया जिस दिन हमारे घरो को तोडा जाना था। सभी लोग अपने-अपने सामान को बचाने की कोशिश करने लगे क्योंकि अब कोई अपने घर को नहीं बचा सकता था। कुछ देर मे बुलडोजर चलने लगे। घरो के साथ-साथ हमारे सपने भी उन पत्तो के तरह बिखर रहे थे जो पतझड़ मे पेड़ की टहनी हिलाने से टूट कर बिखर जाते है। देखते ही देखते पूरा खोरी गाँव टूट गया। हमे बिना किसी सर्वे के इस तरह उखाड़ फेंका, जैसे की तेज तूफान कमजोर जड़ वाले पेड़ को उखाड़ फेकता है।

हमारे घर टूटे कुछ ही दिन हुए थे और कि खोरी गाँव से गुजर रहा था तो देखा कि कुछ लोगो की भीड़ लगी हुई है। मन मे इच्छा हुई तो जाकर देखा कि वहाँ पर लगभग 60 वर्ष की आयु के एक व्यक्ति, खादी कपड़ा पहने, जमीन पर बैठे लोगों को उनके अधिकारों के बारे में बता रहे थे। मै भी वहाँ बैठे लोगों में शामिल हो गया। उनकी बातें सुनकर मन में एक इच्छा हुई अपने साथ हुए अन्याय के खिलाफ लड़ने की। उन्होंने अपनी बात खत्म करते हुए कहा "जिन बच्चो की पढ़ाई छूट रही है उनका स्कूल, कॉलेज में दाखिला हम कराएंगे"। अब मै भी एक ऐसा बच्चा था, जिसकी पढ़ाई रुकी हुई थी। मैने कहा "सर मुझे कॉलेज मे दाखिला लेना है" उन्होंने मुझे डांटते हुए कहा "सर मत बोलो मुझे लोग विमल भाई के नाम से जानते हैं, तुम मुझे काका कह सकते हो। तब से वह हमारे विमल काका हो गए।

उस दिन के बाद हम विमल काका के साथ खोरी के कामो मे जुड़ने लगे। मुझे तस्वीरे खींचना और विडियो बनाने की जिम्मेदारी दी गई। देखते ही देखते लगभग एक साल होने को आया था। मेरे कॉलेज की परीक्षा होने को थी, मैने काका से कुछ किताबों का कहा तो काका ने मंगवा दी और कहा की अभी तुम अपनी परीक्षा पर ध्यान दो। मैं अपनी परीक्षा की तैयारी मे लग गया। अभी मेरे दो विषयों की परीक्षा हुई थी कि खबर आई काका की तबीयत खराब है, उन्हें अस्पताल मे भर्ती कराया गया है। मुझ से रहा नही गया तो अगले दिन मैं अस्पताल पहुँचा तो देखा हमारे कुछ साथी पहले से ही काका के देखभाल के लिए वहाँ थे। मुझे काका से बहुत सारी बाते करनी थी लेकिन वह इस स्थिति मे नही थे कि कुछ सुन या बोल सके। शाम हुई तो मुझे घर आना पड़ा। 15 अगस्त का दिन था। मै घर पर ही था कि एक फोन आया। मैं अभी कुछ कहता, कि उन्होंने कहा "काका अब हमारे बीच नही रहे"।

विमल काका हमारे लिए हमेशा प्रेरणा का स्रोत थे और रहेंगे ।
विमल काका को सतरंगी सलाम !

- नासिर हुसैन

गांधीमय विमल काका

हमारी मुलाकात विमल काका जून 2021 में हुई। जहाँ खोरी गाँव 10000 घरों को तोड़ने का आदेश माननीय सर्वोच्च न्यायालय से मिला और घरों में बुलडोजर चलना शुरू हो गया था। उसी कठिन घड़ी में काका से मुलाकात हुई।

खोरी के लोगों के पास दस्तावेज कमजोर थे। अत: आन्दोलन की शुरूआती रणनीति में विमल काका ने पहला काम लिस्टिंग का किया और उसके साथ ही सरकार को चिट्ठी भेजने का भी काम किया गया जिससे कि सरकार पर दबाव बनाया जा सके। यहीं से खोरी आन्दोलन की शुरुआत हुई।

विमल काका ने लोगो को उनके कानूनी अधिकारों की जानकारी देते हुए खोरी सम्बंधित कोर्ट केस को समय-समय पर समझाया। इतना ही नहीं उन्होंने कोर्ट के आदेश द्वारा सरकारी अधिकारियों से पुनर्वास सम्बन्धी जानकारी के लिए ई-पोर्टल जारी करने का दबाव बनवाया जिसमें लगभग 5000 लोगों ने ई-पोर्टल पर पुनर्वास सम्बंधित फॉर्म भरे। विमल काका की समझ ऐसी थी कि किसी भी साथी के आधे-अधूरे मन से कही हुई बात को भी वे समझ लेते थे और वह लिख देते थे जो हम कहना चाहते थे।

विमल काका ने खोरी आन्दोलन के लिए लोगो को संगठित किया। टीम साथी, युवा साथी, यूथ खोरी आदि नाम से उन्होंने खोरी के साथियों को संगठित किया और इसके साथ ही टीम द्सथी का विस्तार भी किया। खोरी अपडेट, काका के ही दिमाग की उपज थी जिसके द्वारा आज के समय में लगभग 5000 लोगों तक हमारा मेसेज आसानी से पहुँच जाता है। संगठन के विस्तार और लोगों को एक साथ जोड़ने की कला उनमें विद्यमान थी।

उनके मन में गरीबों के प्रति मदद की भावना हमेशा रहती थी। कभी किसी गरीब का एक रुपए कोई ठग न ले, ये चिंता उन्हें हमेशा रहती थी। विमल काका गरीबों की परेशानियों में हमेशा खड़े रहने वाले इंसान थे। विमल भाई को बच्चों से बहुत लगाव था। उन्हें छोटे बच्चों के साथ तस्वीरें खिंचवाना अच्छा लगता था। उन्हें बच्चों की शिक्षा की बहुत चिंता रहती थी,खासकर खोरी के बच्चों को लेकर वह बहुत चिंतित रहते थे। खोरी के बच्चों की शिक्षा के लिए भी उन्होंने बहुत काम किये।

विमल काका ने 10 अगस्त से 15 अगस्त 2022 तक अपने जीवन का संघर्ष किया। अपने उन अंतिम क्षणों में भी उन्हें खोरी की चिंता थी। उनके जीवन के अंतिम संघर्ष के क्षणों में (10 अगस्त से 15 अगस्त तक) हम उनके साथ थे। विमल काका जीवन का वह संघर्ष नहीं जीत पाए और 15 अगस्त 2022 को शाम के करीब 4:00 बजे वह इस दुनिया को अलविदा कह गए। उनके काम करने की रणनीति, एक साथ सबको लेकर चलने की उनकी सोच व क्षमता, नाराज साथी को मनाना, एक सूत्र में बांधकर सबको लेकर चलना यह विमल काका की खासियत थी। काका की कमी हमेशा हमारे जीवन में खलती रहेगी।
बहुत ही महान और गांधीमय हमारे विमल काका।

हमेशा मिस यू

- सरोज पासवान

विमल भाई: संक्रामक ऊर्जा के स्रोत

विमल भाई एक ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने वास्तव में लोगों को एक साथ जोड़ा। उनके द्वारा किए गए सभी कार्यों का केंद्र था- समुदाय की भावना। लोगों को एक साथ जोड़ने में उन्होंने सहयोग के माध्यम से काम किया। उनके साथ हमारे काम में, उन्होंने हमेशा यह सुनिश्चित किया कि लोगों का संघर्ष और आवाज उच्चतम न्यायालय तक पहुंचे। व्यक्तिगत स्तर पर, उन्होंने उन सभी लोगों के बीच समुदाय की भावना को मजबूत किया। वह हमेशा अपने साथ एक संक्रामक ऊर्जा और सकारात्मकता लेकर आए। उनके दृष्टिकोण में बहुत बारीकियां थीं, उदाहरण के लिए- पर्यावरण के लिए लड़ते हुए वह लोगों की चिंताओं को कभी नहीं भूले।

विमल भाई ने हम्रेशा यह सुनिशचित किया कि उन्होंने जहाँ काम किया, वहाँ के लोगों के अन्दर खुद के पैरों पर खड़े होने की क्षमता बढ़ती रहे। इसके बलबूते पर अब हज़ारों लोग हैं जिनके संघर्ष को विमल भाई के युवा साथी आगे बढ़ाएँगे।

- **सृष्टि और तृप्ति**

जिंदाबाद काका

वैसे तो काका के साथ बिताई गई बहुत सी यादें है, पर कुछ यादें ऐसी होती है जो अपनी छाप छोड़ जाती है। काका और हमने काफी लम्हे साथ मे बिताए जैसे काका ने कई बार हमें उनके जन्मदिन, दीवाली, नए साल के जश्न, पिंकी दीदी की पार्टी, और भी बहुत से मौको पर अपने हाथो से दावत खिलाई। मैं हमेशा से सामाजिक कार्यों में नहीं था, परन्तु घर टूटने के बाद जब काका मिले और उन्होंने मुझे अपने हक़ के लिए लड़ना सिखाया और भी बहुत सी बातें सिखाई।

काका के अंतिम दिनों में जब हम अस्पताल में थे, उस समय नींद किसे कहते है, मैं यह भी भूल गया था। बस मन में यही बात चलती रहती थी कि किसी भी तरह काका दोबारा से स्वस्थ हो जाए और फिर से एक बार हम पर अपना गुस्सा दिखाए,प्यार जताए। लेकिन शायद विधि का विधान कुछ और ही था। काका के साथ जितना भी समय बिताया वह बहुत खास था कुछ समय पहले की ही बात है।

कुछ नोक झोंक की वजह से काफी लंबे समय से मैं काका के घर नहीं गया था है। ऐसा नहीं था की हमारी बात नहीं होती थी। हम मैसेज में या ऑनलाइन मीटिंग में अक्सर बाते किया करते थे। ये बात 27 जुलाई 2022 की है। मैं सुबह सो कर उठा तो मेने अपना व्हाट्सएप चेक किया तो उसमे हमारे ग्रुप में मैसेज था जिसमे बताया गया की काका की तबीयत खराब है। उसी दिन काका नगर निगम,फरीदाबाद (एमसीएफ) के ऑफिस जाने वाले थे। मैने निर्णय लिया की मैं काका को देखने जाऊंगा। मैं उसी समय काका के घर के लिए निकल गया। जब मैं उनके घर पहुंचा तब वह अपने सोफे पर लेटे हुए थे। उन्हें काफी तेज बुखार था वह दवाई खा कर आराम कर रहे थे कुछ देर बाद जैसे ही उनका बुखार कम हुआ वह अपने सोफे से उठे और एमसीएफ ऑफिस जाने के लिए तैयार होने की बात करने लगे । वहाँ मौजूद बीना आंटी, सरोज अंकल, नासिर भाई, सभी लोगो ने उन्हें उनके खराब स्वास्थ्य का हवाला देते हुए मना किया परन्तु काका ने हर बार की तरह स्वास्थ्य से पहले काम को महत्त्व दिया। इस बात को लेकर काका से बहस भी हो गयी परन्तु वह तब भी नहीं माने। अत: मैं, नासिर भाई और काका एमसीफ कार्यालय जाने के लिए निकल पड़े । कार्यालय के रास्ते में टैक्सी में काका मोबाइल क ज़रिये काम करते रहे। एमसीफ कार्यालय जाने का यह मेरा पहला मौका था जिस करण मैं थोड़ा असहज महसूस कर रहा था और मुझे लग रहा था कि वहाँ मौजूद अधिकारी हमसे आचे से बात नहीं करेंगे। परन्तु अन्दर जाने के बाद उन्होंने हमसे बहुत अच्छे से बात की और हमने खोरी की समस्याओं से सम्बंधित पत्र दिया और आगे के लिए काफी चर्चा की।

इस पूरी प्रक्रिया में मुझे जिसने सबसे ज्यादा प्रभावित किया वो था काका का उनसे बात करने का तरीका। जिस तरह काका ने उनसे बात की, मुझे ऐसा लगा ही नहीं की हम जिनसे बात कर रहे है वो बड़े ऑफिसर है और हम खोरी के पीड़ित लोग है। परन्तु बाहर आकर मैं काफी हँसा

क्योंकि काका ने बातचीत के दौरान उनकी काफी खिचाई भी की थी। काका ने कहा वैसे तो कोई मुझे झुका नहीं सकता लेकिन जहा लोगो की हित्त की बात होगी वहा में झुक भी जाऊंगा और मुझे इसमें कोई दिक्कत नही है अगर मेरे झुकने से किसी का भी भला होता है तो वो मेरे लिए बहुत बड़ी बात है। काका उस मीटिंग के बाद काफी खुश थे क्योंकि इस तरह की बातचीत पहली बार हुई थी और काफी अच्छी भी रही थी।

काका को अपने हाथो से बनाया हुआ खाना खिलना बहुत पसंद था । वह अक्सर हमें अपने हाथो से नए नए पकवान बना कर खिलाया करते थे। हमारी हर मीटिंग में भी खाने पीने का इंतजाम काका ही किया करते थे। वे खुद भी खाने-पीने के बहुत शौक़ीन थे।

मैं ये नही कहता की मैं काका को बहुत अच्छे से जानता हूँ। पर जितना भी मैंने उनको जाना है, काका बहुत ही जिंदादिल इंसान थे। उन्होंने मुझे काफी कुछ सिखाया, जो शायद ही कभी मैं सीख पाता। मानता हूँ कि हमारे बीच काफी नोक-झोंक होती थी जोकि शायद हर किसी के साथ उनकी रही होगी लेकिन ये भी सच है मेरे पास पहला मैसेज या कॉल उन्हीं का रहता था जिसमे ज्यादा से ज्यादा 1 से 2 दिन या उस से भी कम समय का अंतर रहता था।

अंत में, मैं बस इतना कहना चाहूँगा कि काश काका हम साथ में थोड़ा और सफर तय कर पाते। अभी तो आपसे बहुत कुछ सीखना बाकी था। थोड़ी सी और खट्टी मीठी यादों को कैद करते अपने पिटारे में काका हमेशा मेरे दिल में अमर रहेंगे । आज भी जब मैं किसी कार्य को करता हूं तो मुझे उनकी मौजूदगी महसूस होती है।

ज़िंदाबाद काका

आपका नालायक बेटा

- अमन

काका

खोरी गाँव दिल्ली हरियाणा के बॉर्डर पर 170 एकड़ जमीन में बसा हुआ गाँव था। 80 से 90 सालों से लोग यहाँ रहते आए जिसमें हर राज्य से यहां आकर बसे हर जाति के लोग थे। यहाँ सब मिलजुल कर हंसी खुशी रहते थे तथा यहाँ अच्छे-अच्छे घर बने थे। यहाँ बड़ी-बड़ी खानें थी जिनमे से कुछ खानें आज भी हैं। यहां लोग पत्थर तोड़ने (माइनिंग) का काम करते थे जोकि 80 के दशक में बंद हो गया था। जिसके बाद उसमें काम करने वाले लोग यहीं पर बस गए और इतने सालों के बाद वर्ष 2021 में एक दिन एक नोटिस लगता है जिसमें लोगों को घर खाली करने के लिए कहा जाता है। किसी को कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि क्या हुआ। सब ने अपनी तरफ से कोशिश की तोड़फोड़ को रुकवाने की लेकिन कहीं पर भी किसी की सुनवाई नहीं हुई। हम अपने घरों को टूटते देख रहे थे कुछ समझ नहीं आ रहा था। फिर मुझे डॉक्टर इशिता चटर्जी ने हमे विमल काका से मिलवाया। एक डर का साया था जिसकी वजह से न कहीं आ सकते थे और न जा सकते थे। 7 जून 2021 और 14 जुलाई 2021 हमारे लिए बहुत भयानक दिन था। 14 जुलाई से पहले इस डर के साए में ही मैंने फोन पर काका से बात की। बात करने से पहले वह विमल भाई थे, पर मुझसे बात होने के बाद मैंने उन्हें कहा कि मैं आपको काका बोलूंगी, विमल भाई नहीं बोलूंगी । फिर विमलभाई का नाम पूरे खोरी गाँव में काका के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

14 जुलाई के बाद काका खोरी गाँव में पहली बार मुझसे मिलने आए, उस समय करीब 4000 पुलिस की घेराबंदी थी। सब इधर-उधर भाग रहे थे। कोई रो रहा था तो कोई अपना सामान बचा रहा था। कुछ लोगों के बीच में काका जमीन पर बैठकर मुझसे और लोगों से बातचीत करने लगे। काका को जब मैंने देखा तो उनका एक अलग ही अंदाज था। खुद के हाथ से सिला खादी का धोती-कुर्ता पहने, कंधे पर एक गमछा टांग रखे थे। काका से हमारा दुख देखा नहीं गया। मुझे काका बहुत अच्छे लगे। फिर उनके साथ मिलकर लोगों के अधिकार की लड़ाई शुरू की।

काका और हम कुछ लोगों ने मिलकर केस फाइल किया। काका बहुत जिंदादिल इंसान थे, कभी हार ना मानने। उन्होंने लोगों को बहुत हिम्मत दी। वे खोरी गाँव के लोगों के लिए भूखे प्यासे लगे रहते थे। बीमार होते हुए भी उन्होंने कभी हमें पता नहीं लगने दिया कि वह बीमार हैं और वह लगातार 14 महीनों तक खोरी गाँव की लड़ाई लड़ते रहे। उन्होंने बीमारी की वजह से भी कभी इधर उधर जाना नहीं छोड़ा। उनके अंदर मुझे अपने पिता नजर आते थे। उनका प्यार, उनका सिखाने का तरीका सबसे अलग था। खोरी गाँव और उसके लोग ही उनकी जिंदगी बन गए थे। उन्हें खोरी गाँव के अलावा कुछ याद नहीं रहता। काका बहुत लोगों की मदद करते थे। खोरी में किसी की रेडी बुलडोजर वालों ने तोड़ दी थी तो काका ने उन्हें दूसरी रेडी लाकर दी ताकि वह अपना घर चला सके। किसी तरह लोगों तक राशन भी पहुंचाए, इमरजेंसी लाइट का इंतजाम किया, तोड़फोड़ के दौरान बच्चों की पढ़ाई खराब न हो इसके लिए लोगों से मदद मांग कर उनका

एडमिशन करवाया। उनकी एक टीम बनाई जिसे आज हम सब युवा साथी के नाम से जानते हैं। लगातार 15 महीने के संघर्ष के कारण 1009 लोगों को पुनर्वास मिला, कुछ किराए के पैसे भी आए हैं और अभी काका की लड़ाई को टीम साथी जारी रखेगी।

10 अगस्त 2022 मेरे और हमारी टीम के लिए बहुत ही ख़राब का दिन था। सुबह करीब 9:00 बजे फोन आया कि काका की हालत बहुत खराब हैऔअर एक-एक करके सभी साथी काका के घर पहुँचे। काका की हालत सच में बहुत खराब थी। किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा था। कुछ साथियों ने एंबुलेंस को फोन किया परन्तु दिल्ली और हरियाणा के बॉर्डर के चक्कर में कोई भी एंबुलेंस वाला नहीं पहुंचा। जिसके बाद कुछ साथी टैक्सी में काका को लेकर और कुछ साथी अपनी अपनी बाइकों से अस्पताल के लिए निकले। मुझे तब तक कुछ नहीं पता था परन्तु जैसे ही मुझे पता चला मैं भी तुरंत अस्पताल के लिए निकल गयी। अस्पताल में मैंने अपनी दोस्त और साथी तारिणी को फोन किया तारिणी को काका अपनी बेटी की तरह मानते थे। काका को सफदरजंग अस्पताल से एम्स अस्पताल में रेफेर कर दिया गया। एम्स में कोई भी डॉक्टर काका को देखने को तैयार नहीं हो रहा था। फिर करीब 2 घंटे बाद एक डॉक्टर के हाथ पैर जोड़ने के बाद उन्होंने अपने साथी डॉक्टर को हमारे साथ भेजा काका को चेक करने के लिए जिसके बाद काका को इमरजेंसी वार्ड में भर्ती किया गया। काका की स्थिति हर दिन और खराब होती जा रही थी आईसीयू में बेड खाली ना होने की वजह से डॉक्टर उनको शिफ्ट नहीं कर पा रहे थे यहां तक कि डायलिसिस करने की नौबत आ गई थी। 5 दिन तक काका जिंदगी और मौत से लड़ते रहे।

15 अगस्त 2022 को काका हम सब को छोड़कर इस दुनिया से चले गए। किसी को भी इस बात पर भरोसा नहीं हो रहा था कि काका अब हमारे बीच में नहीं रहे। मुझे ऐसा लगा कि जैसे मैंने एक बार फिर अपने पिता और उनके प्यार को खो दिया।

कुछ महीने पहले उन्होंने मुझे एक थैला और एक पानी की बोतल और एक खादी का रुमाल, पैन और डायरी के साथ में दिया था उस समय मुझे इतना समझ में नहीं आया था। पर अब समझ में आया कि वह थैला उन्होंने मुझे क्यों दिया था वह थैला नहीं था वह एक जिम्मेदारी थी जो कि मुझे काका ने दिया जो कि खोरी गाँव है। यह ऐसी लड़ाई है जो हर जगह के लिए हैं, जहाँ गरीबों और लाचारों पर अन्याय हो रहा है और हमें ही इसको लड़ना और जारी रखना है।काका जितना गुस्सा करते थे उससे दोगुना प्यार। उनकी कोशिश हमेशा शिक्षा और ज्ञान देने की रहती थी। काका ने हमें बहुत कुछ सिखाया।

विमल काका बहुत ही जिंदादिल इंसान थे और जिंदादिल इंसान कभी मरते नहीं। वह इतिहास बनाते हैं। ऐसे ही हमारे विमल काका भी हमारे खोरी गाँव में और खोरी गाँव के लोगों के दिलों में हमेशा अमर रहेंगे। काका ने मुझे जो रास्ता दिखाया है, उस पर आगे बढ़ती रहूंगी और काका ने

जो संघर्ष अधूरा छूट गया है, उसको भी हम पूरा करेंगे। मुझ में काका जितनी सहनशक्ति तो नहीं पर मैं कोशिश कर रही हूं। काका मेरी जिंदगी का हिस्सा बन चुके थे और अब कभी दूर नहीं हो सकते।

काका ने हमें नारा दिया था,

लड़ेंगे और जीतेंगे, लड़े हैं और जीते हैं

- **रेखा**

05 उपसंघार

खोरी गाँव, उन कई बस्तियों में से एक है जिन्हें पिछले 1.5 वर्षों में दिल्ली एनसीआर क्षेत्र में ध्वस्त कर दिया गया है। वन संरक्षण के नाम पर मेहनतकश लोगों या आदिवासियों को उनके घरों से विस्थापित करना कोई नई बात नहीं है। किंतु, खोरी गाँव के निवासियों की क्रूर जबरन बेदखली, विशेष रूप से महामारी के दौरान, उनके साथ किये गए व्यवहार, एक परेशान करने वाले बदलाव को चिन्हित करता है। इसने हमें बुलडोजर राजनीति की झलक दिखाई, जो अब हमारी हकीकत बन गई है।

जबरन बेदखली के दौरान मानवाधिकारों का उल्लंघन खतरनाक था। कई मायनों में, इसने गरीबों और अल्पसंख्यकों के साथ अमानवीय व्यवहार को वैध ठहराया। कोर्ट के आदेश के तुरंत बाद बिजली और पानी की कनेक्शन बंद कर दी गई। समुदाय को संगठित होने और कार्यकर्ताओं और पत्रकारों के साथ संवाद करने से रोकने के लिए जल्द ही धारा 144 लागू कर दी गई। रिपोर्टरों को बस्ती का विध्वंस रिकॉर्ड करने और निवासियों से बात करने से रोक दिया गया था। खोरी गाँव के अंदर क्या हो रहा था, इस बारे में किसी भी जानकारी को नियमित पुलिस गश्त के माध्यम से अवरुद्ध करने का जानबूझकर प्रयास किया गया था, जिसमें लोगो को धमकी और डराना शामिल था।

विमल भाई खोरी गाँव के प्रतिरोध प्रयासों का नेतृत्व करने में हिचकिचा रहे थे क्योंकि अन्य कार्यकर्ता और समूह बस्ती के समुदाय को लामबंद करने और सरकार के साथ बातचीत शुरू करने की कोशिश कर रहे थे। हालाँकि, स्थिति बिगड़ने लगी, तो अधिकांश समूहों ने खोरी गाँव

के निवासियों को छोड़ दिया, और समुदाय को समझ नहीं आ रहा था कि क्या किया जाए। 7 जून, 2021 के सर्वोच्च कोर्ट का आदेश और 14 जुलाई, 2021 को बेदखली की शुरुआत के बीच, बहुत सारे समर्थक और हमदर्द थे, लेकिन जैसे ही बुलडोज़र दिखा, एकजुटता कम हो गई। जब किसान नेता गुरनाम सिंह चढ़ूनी ने 30 जून, 2021 को खोरी गाँव का दौरा किया और अपना समर्थन दिया, तो खोरी गाँव के कई निवासी उनके साथ शांतिपूर्ण विरोध करने के लिए अपने घरों के बाहर इकट्ठा हो गए। उस दौरान पुलिस ने लोगों पर बेरहमी से लाठीचार्ज किया। उस दिन भी महिलाओं और बच्चों के साथ हिंसक और क्रूर व्यवहार किया गया। खोरी गाँव के इतिहास में यह एक दर्दनाक दिन था। तभी विमल भाई ने यह कदम लिया कि वे अंत तक निवासियों के साथ लड़ेंगे और इसके साथ ही समुदाय के साथ उनका पूर्णकालिक जुड़ाव शुरू हो गया।

उनका पहला कदम खोरी गाँव के विध्वंस की शुरुआत के कुछ दिनों के भीतर एक जन सुनवाई का आयोजन करना था। 4-5 दिनों में इसका आयोजन करना एक मुश्किल काम था। लेकिन वह विभिन्न आंदोलनों के अपने 38 साल के करियर में बनाए गए साथियों और रिश्तों के अपने नेटवर्क के माध्यम से ऐसा करने में सक्षम थे। जन सुनवाई के जूरी सदस्यों में पर्यावरणविद, सामाजिक कार्यकर्ता, वकील और शिक्षाविद शामिल थे। खोरी गाँव के निवासी, पत्रकार, वकील, और कुछ अन्य साथी जिन्होंने बाद में "टीम साथी" समूह बनाया, सुनवाई में शामिल हुए। चूंकि यह सुनवाई महामारी के दौरान हुई और उस समय धारा 144 भी लागू थी, इसलिए सुनवाई ऑनलाइन आयोजित की गई थी। इसका सीधा प्रसारण किया गया ताकि कोई भी व्यक्ति इसे देख सके। इसे रिकॉर्ड करके यूट्यूब पर अपलोड किया गया था ताकि यह एक बड़े दर्शक वर्ग तक पहुंच सके।

खोरी गाँव को बिना किसी सर्वेक्षण के उजाड़ दिया गया, और इसके विध्वंस के दौरान विकसित की जा रही प्रतिबंधात्मक पुनर्वास नीति का मतलब था कि अधिकांश निवासी अपात्र होंगे। विमल भाई इस बात से अच्छी तरह वाकिफ थे कि एक बार बेदखली खत्म हो जाने के बाद, जब निवासी बिखर जाएंगे तो निवासियों तक पहुंचना मुश्किल हो जाएगा। इसलिए, जब खोरी का विध्वंस चल रहा था और धारा 144 भी जारी थी, तब विमल भाई और साथियों के पास गणना करने का दुर्जेय कार्य था, क्योंकि 4-5 से अधिक लोग इकट्ठा नहीं हो सकते थे। विमल भाई ने परिवारों के नाम, उनके फोन नंबर और उनके पास मौजूद सरकारी दस्तावेजों की सूची के बारे में डेटा एकत्र करने के लिए एक सरल प्रारूप बनाया। इन प्रारूपों को भरने के लिए हर गली के कुछ निवासी जिम्मेदार थे। इस प्रक्रिया के अंत तक, लगभग 5000 परिवारों के बारे में जानकारी एकत्र करने में सफल रहे। यह सूची आगे के सभी कार्यों की नींव बन गई है। इन समूहों को व्हाट्सएप संदेशों के माध्यम से नियमित अपडेट भेजे गए हैं ताकि उन्हें अदालती मामलों के बारे में सूचित किया जा सके, उन्हें उनके अधिकारों के बारे में शिक्षित किया जा सके और समय-समय पर गलत सूचनाओं को दूर किया जा सके। जिनके पास स्मार्टफोन नहीं था, वे फोन कॉल के जरिए जुड़े। एक ब्लॉग भी बनाया है जहां ज्यादातर चीजों का रिकॉर्ड किया गया ताकि भारत

और दुनिया भर में लोग खोरी के लोगों के संघर्षों के बारे में जान सकें उसे एकजुटता प्रदान कर सकें।

खोरी गांव की लड़ाई शुरू से ही कठिन लग रही थी। सर्वोच्च न्यायालय के फैसले से स्पष्ट था कि न्यायाधीश गरीबों को, मेहनतकश लोगों को, शहर के समान निवासियों के रूप में नहीं देखते थे। जिस तरह से खोरी गाँव को उजाड़ा गया, उसके निर्मम विध्वंस को वैध ठहराया गया, और सार्वजनिक क्षेत्र में चर्चा की गई, उससे पता चलता है कि समाज का एक बड़ा वर्ग गरीब विरोधी विचारधारा रखता है। महामारी और बारिश के दौरान बिना किसी अस्थायी व्यवस्था के 50 साल पुरानी बस्ती को तोड़ना एक स्पष्ट संदेश देता है कि शहर में गरीबों के लिए कोई जगह नहीं है। हालाँकि जिन लोगों ने खोरी विध्वंस का विरोध करने का फैसला किया था, वे दृढ़ थे कि हमें लड़ना होगा, भले ही यह उस समय असंभव लग रहा हो।

विमल भाई के निधन से इस आंदोलन को गहरा धक्का लगा है, लेकिन इससे हमारे विश्वास कमज़ोर नही पड़ने दिया। जब भी चीजें धूमिल दिखाई देती थी, वह हमें अपने कई अन्य आंदोलनों की याद दिलाते थे, विशेष रूप से 37 वर्षीय नर्मदा बचाओ आंदोलन की। जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं कि हमने पिछले वर्ष में क्या हासिल किया है, तो हम महसूस करते हैं कि उन्होंने एक टीम बनाने का सबसे कठिन काम पूरा किया है और कई प्रकार की दक्षताओं वाले व्यक्तियों का चयन किया। जब भी हमें पुराने नेताओं, अन्य कार्यकर्ताओं और समूहों से बहुत अधिक विरोध और क्षेत्रीय संघर्ष का सामना करना पड़ा, उनके अनुभव और विश्वास ने हमें एक साथ रखा। वह हमारी सबसे बड़ी उम्मीद थे और रहेंगे।

आज हम विमल भाई के बताए रास्ते पर चलते रहे हैं। हम सुनिश्चित करेंगे कि उनका काम और विरासत जारी रहे। हम उसी संकल्प के साथ लड़ेंगे- आखिरी व्यक्ति को न्याय मिलने तक लड़ेंगे।

नदियों के संग बहो
आपका अदम्य शुद्ध हृदय
हम आपको तलाशते रहेंगे
आपकी कविताओं, लेखन और कला में

- इशिता चटर्जी

खोरी गाँव उजाड़े जाने से पहले

खोरी गाँव उजाड़े जाने के दौरान

खोरी गाँव उजाड़े जाने के बाद

खोरी गाँव संघर्ष के साथी

टीम साथी, युवा साथी संघर्ष जारी हैं....